Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पच्छ असाहुया भवे
अच्चेहि अणुसास अप्पगं।

मरणकाल में शोक या अनुताप न हो इसलिए तू काम-भोगों का अतिक्रमण कर अपने को अनुशासित कर।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 21 • 27 फरवरी - 5 मार्च, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-02-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

आबू रोड स्थित ब्रह्मकुमारी मुख्यालय में आचार्यप्रवर का पदार्पण

सद्भावना का उदाहरण है ब्रह्मकुमारी परिवार : आचार्यश्री महाश्रमण

आबु रोड, १७ फरवरी, २०२३

भारतीय ऋषि परंपरा के महान महर्षि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर आबु रोड के ब्रह्मकुमारी मुख्यालय पधारे। ब्रह्मकुमारी परिवार ने पूज्यप्रवर सहित धवल सेना का आध्यात्मिक स्वागत किया।

महातपस्वी आचार्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारा जीवन दो तत्त्वों का योग है। एक तत्त्व है–आत्मा और दूसरा शरीर। आत्मा और शरीर का मिश्रित रूप हमारा जीवन है। जहाँ कोरी आत्मा या कोरा शरीर है, वहाँ जीवन नहीं हो सकता। जैसे मोक्ष में परम आत्माएँ हैं, वहाँ शरीर नहीं है। मृत शरीर पड़ा है, पर उसमें आत्मा नहीं तो जीवन नहीं हो सकता।

मृत्यु है, आत्मा और शरीर का वियुक्त हो जाना। शरीर और आत्मा का आत्यंतिक वियोग मोक्ष है। हमारे शरीर में आत्मा है। अनादि काल से आत्मा का अस्तित्व है और हमेशा रहेगा। आत्मा जन्म-मरण के चक्र में भ्रमित हो रही है। जन्म-मरण के साथ दुःख भी जुड़ा हुआ है। दुःख से मुक्त होना प्राणी का भाव होता है। इसके लिए जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त होना पड़ेगा तभी दुःख मुक्ति हो सकती है।

जन्म-मरण की परंपरा से निकलने का उपाय है, अध्यात्म की साधना। जब आत्मा समता में उपस्थित हो जाती है, फिर संकल्प-विकल्पों का भी नाश हो जाता है। राग-द्वेष के भाव नहीं रहते। राग-द्वेष के भाव जन्म-मरण की परंपरा के हेतु होते हैं। राग-द्वेष के भाव क्षय होते ही आत्मा शरीर से हमेशा के लिए मुक्त हो मोक्ष में विराजमान हो जाती है। परमात्मा स्वरूप को प्राप्त हो जाती है।

समता की साधना अध्यात्म का मूल तत्त्व है। हम जीवन जीते हुए भी समता में रह सकें। समता के अनेक आयाम हैं–अनासक्ति, अहिंसा की चेतना। कमल पत्र की तरह आदमी संसार सागर में रहते हुए भी निर्लिप्त-अनासक्त रहे। यह अध्यात्म की साधना है। जीवन में अनुकूलता-प्रतिकूलता, सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, मान-अपमान ये स्थितियाँ आ सकती हैं, इन सबमें समता रहे। यह एक प्रसंग से समझाया कि अभाव में दुखी न बनें।

हमारे जीवन में ज्यों-ज्यों समता का भाव पुष्ट होता है, त्यों-त्यों मानो परमात्मस्वरूप के निकट होते चले जाते हैं। आचार्यश्री ने जैन संतों के पाँच महाव्रतों को एवं जैन साधना को समझाया। जैन साधु स्वकल्याण के साथ परकल्याण का भी जितना हो सके, करने का यथासंभव प्रयास करते हैं। अहिंसा यात्रा और उसके तीन संकल्पों को भी विस्तार से समझाया।

हम जगह-जगह जाते हैं, ब्रह्मकुमारी परिवार हमारे पास आता है। आज हम ब्रह्मकुमारी परिवार में आए हैं। सद्भावना का उदाहरण है ब्रह्मकुमारी परिवार। उदारता का दर्शन मैंने ब्रह्मकुमारी परिवार की सदस्याओं में किया है। आचार्यश्री ने फरमाया कि आज इनके प्रांगण में आए हैं। सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति का हम यथाशक्य प्रचार करते हैं। प्रतिज्ञाएँ भी करवाते हैं। ताकि हमारे देश में शांति रहे।

शांति हमारे भीतर में भी रहे और बाहर भी रहे। शांति के लिए समता की साधना करें। सबके प्रति मैत्री भाव रहे। मैं ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय परिवार के प्रति अध्यात्म मंगलकामना करता हूँ। ये पूरे विश्व में मंगल करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा दुःख मुक्ति की परंपरा रही है। शक्ति और सत्य को प्राप्त करना चाहते हैं, मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं। उसके लिए हमारे सामने मार्ग हो तो आदमी गंतव्य तक पहुँच जाता है। भारत में अनेक परंपराएँ हैं। जिनसे हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। राजयोग में अध्यात्म पर अधिक बल दिया जाता है। ध्यान भी करवाया जाता है। जैन परंपरा में भी ध्यान को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। प्रेक्षाध्यान पद्धति से अनेक लोगों ने शांति प्राप्त की है।

दीदी ने बताया कि आचार्यश्री गीता में उल्लेखित स्थितप्रज्ञ का साक्षात उदाहरण हैं। 'रहो भीतर, जीयो बाहर' यह सूक्ति आपके जीवन में अनुभव की जा सकती है। आपके लिए कहना चाहुँगी कि महापुरुषों के अभ्योदय से जब ज्योतिर्मय रश्मियाँ आलोकित होती हैं। महापुरुषों के प्रवचनों से जीवन-पथ पाकर जनमानस सुवासित होता है। जीवन में आत्मिक सुख व शांति के लिए महापुरुषों की संगत जरूरी है। उनके मुखारविंद से अमृत वचन प्रवाहित होते हैं।

ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेक्रेटरी मृत्युंजय भाई ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्रजापति ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय का नया इतिहास देख रहे हैं। आज शिव जयंती भी है। आपने लंबी यात्राएँ की हैं। हम आपका स्वागत करते हैं। त्याग-तपस्या में जैन धर्म और ईश्वरीय विद्यालय में समन्वय है। बाबा ने आप जैसे तपस्वी, दिव्य पुरुषों को यहाँ भेजा है। पदयात्राएँ करते हुए जनकल्याण कर रहे हैं। आप भी विश्व शांति की प्रेरणाएँ दे रहे हैं।

मुनि कुमार श्रमण जी ने अहिंसा यात्रा के बारे में विस्तार से समझाते हुए कहा कि आज तेरापंथ धर्मसंघ का ब्रह्मकुमारी परिवार से पारिवारिक मिलन हो रहा है। दोनों में काफी समानताएँ हैं।

बहन गीता दीदी ने राजयोग के विषय में विस्तार से समझाया। राजयोग पर डॉक्यूमेंटरी दर्शायी गई। राजयोग की अनुभूति करवाई।

ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा पूज्यप्रवर का स्मृति चिह्न एवं साहित्य से सम्मान किया गया। तेरापंथी महासभा द्वारा साहित्य से ब्रह्मकुमारी परिवार का सम्मान किया गया। परमपिता की स्मृति में ध्यान, शांति का प्रयोग करवाया गया।

कार्यक्रम का संचालन दीदी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

✦ *जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का गुजरात राज्य में भव्य मंगल प्रवेश

आत्मस्थ होने के लिए मध्यस्थ होना आवश्यक है : आचार्यश्री महाश्रमण

अंबाजी, गुजरात, १६ फरवरी, २०२३

राजस्थान की धरा पर दो चातुर्मास संपन्न कर आज आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ महात्मा गांधी की पावन धरा की ओर बढ़ रहे थे। यह ऐसी पावन धरा है जहाँ आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी सन् २००२ में एक शांति की मशाल लेकर पधारे थे। उसी धरा पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अनंतर पट्टधर, साधना के श्लाका पुरुष, तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता का आज गुजरात राज्य में अंबाजी से प्रवेश हुआ। पूरे गुजरात से विशाल जनमेदिनी पूज्यप्रवर का पलक पावड़े बिछाए स्वागत में खड़े थे।

युगप्रधान आचार्यप्रवर ने गुजरात प्रवासियों को मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जितने भी बुद्ध-तीर्थंकर अतीत में हुए हैं और जितने भी तीर्थंकर बुद्ध भविष्य में होंगे उनका प्रतिष्ठान-आधार शांति है। जैसे प्राणियों का आधार पृथ्वी होती है। वैसे बुद्धों-तीर्थंकरों का आधार शांति होती है।

शांति आधार इसलिए है कि बुद्ध बनने के लिए मोहनीय कर्म को एकदम क्षय रूप में शांत करना आवश्यक होता है। अशांति फैलाने वाला एक मोहनीय कर्म है। इस मोहनीय कर्म को काटने के बाद ही कोई बुद्ध-तीर्थंकर-केवली बन सकता है। शांति है तो बुद्धत्व-तीर्थंकरत्व है।

जितना-जितना मोहनीय कर्म कमजोर पड़ता है, उतनी-उतनी शांति होती है। शांति आदमी को अभिष्ट होती है। बाह्य निमित्त भी शांति में कुछ सहायक बन सकते हैं। पर मोहनीय कर्म क्षय होने से आदमी भीड़ में भी परम शांति में रह सकता है। मोहनीय कर्म का कृषिकरण और विनाश ही शांति का उपादान है। हमारे जीवन में निमित्त का भी थोड़ा प्रभाव पड़ सकता है, पर उपादान पर ध्यान देना चाहिए।

राग-द्वेष की मुक्ति की साधना ही वास्तविक साधना है। इससे हमें आंतरिक शांति उपलब्ध हो सकती है। जैन धर्म में जो समता की बात है, वीतरागता की बात है। जैन शासन जो तीर्थंकरों-भगवान महावीर से जुड़ा शासन है, उस शासन में हम साधना कर रहे हैं। शांति के लिए समता की साधना आवश्यक होती है।

कषायों से मुक्ति ही एक प्रकार से मुक्ति है। कषाय दूर रहने से हम आत्मस्थ बन सकते हैं। आत्मस्थ होने के लिए मध्यस्थ होना आवश्यक है। न राग, न द्वेष में जाना। आत्मस्थ होने से शांति प्राप्त हो सकती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि मैं तो ठहरा हुआ ही हूँ, तुम ठहर जाओ। हम स्वयं आत्मस्थ बनें और दूसरों को आत्मस्थ बनाने का प्रयास करें।

जिंदगी में अध्यात्म का पथ मिलना बहुत बड़ी बात होती है। साधु का सम्यक्त्व और संयम रत्न है, बहुत बड़ी चीज है। भौतिक रत्न इनके सामने तुच्छ है। साधु जैसा बड़ा उद्योगपति, मालिक मिलना मुश्किल है।

आज गुजरात आना हुआ है। योग की बात है कि मैं २००३, २०१३ में गुजरात में था, आज २०२३ में भी गुजरात में आना हो गया है। आचार्य महाप्रज्ञ जी उत्तर गुजरात में पधारे थे। हमारा उत्तर गुजरात में प्रवेश हुआ है। यह गांधी का गुजरात है। सांस्कृतिक-धार्मिक राज्य गुजरात है।

यहाँ भी सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति व धार्मिक प्रभावना में हम योगभूत बन सकते हैं।

आज चतुर्दशी-हाजरी का भी दिन है। पूज्यप्रवर ने हाजरी के रूप में मर्यादाओं को समझाया। शासनमाता ने आचार्यों के साथ अनेक यात्राएँ की थीं। हम मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहें, यह काम्य है। लेखा पत्र का वाचन साधु-साध्वियों द्वारा किया गया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में चार युग माने जाते हैं—सतयुग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलयुग। आचार्यप्रवर का जन्म कलयुग में हुआ है, इसलिए हमें भी कलयुग में आपका मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। आप कलयुग को सतयुग बना रहे हैं। युगप्रधान बनने के बाद आचार्यप्रवर पहली बार उत्तर गुजरात में आए हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में उत्तर गुजरात सभा की ओर से उपासक शंकरलाल पितलिया, अंबाजी तेरापंथ समाज से आनंदीलाल धाकड़, कांतीलाल, उपासक अर्जुन मेड़तवाल, गौतम बाफना ने अपनी भावना व्यक्त की। अंबाजी तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद समाज, संपूर्ण गुजरात सभा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत की प्रस्तुति दी। मुनि अक्षय प्रकाश जी, साध्वी अक्षयप्रभा जी, समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। श्रावक समाज, सूरत द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। लोकसभा सांसद बनासकाठा पर्वतभाई, बालु भाई ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान भीतर के अंधकार को दूर कर सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सियाल, १८ फरवरी, २०२३

मोक्ष मार्ग के सेतू आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १८ किलोमीटर का विहार कर सियाल पधारे। शांतिदूत की इस यात्रा का राजस्थान का आज का अंतिम प्रवास है। इसके पश्चात आचार्यप्रवर गुजरात की धरा पर पदार्पण करेंगे।

मुख्य प्रवचन में महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच इंद्रियाँ हैं, जो ज्ञानेंद्रियाँ हैं, वे क्षयोपशम भाव है। भावेंद्रिय के रूप में है। पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं। हाथ-पाँव आदि कर्मेन्द्रियाँ व श्रोत-चक्षु आदि ज्ञानेंद्रियाँ होती हैं।

कर्ण-श्रवणेन्द्रिय होती है। श्रवणेन्द्रिय होने पर ही कोई प्राणी पंचेन्द्रिय कहलाने का अधिकारी होता है। इंद्रिय-जगत में श्रवणेन्द्रिय का होना, आकाश के शिखर को छूना होता है। मनुष्य व पंचेन्द्रिय तिर्यन्चों में श्रवणेन्द्रिय होती है। देवों व नारकीय जीवों के भी श्रवणेन्द्रिय होती है।

शास्त्रकार ने कहा है कि सुनकर आदमी कल्याण को व पाप को भी जान लेता है। फिर जो श्रेय हो, अच्छा हो उसको आचरण में लाना चाहिए। जो पाप है, उसको छोड़ देना चाहिए। वर्तमान में तो चक्षुरिन्द्रिय का भी बड़ा उपयोग है। अनेक ग्रंथ पढ़ने को मिल सकते हैं। चक्षुरिन्द्रिय भी ज्ञान का बड़ा माध्यम है।

श्रोत्र और चक्षु से ज्ञान की पुष्टि हो सकती है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो कान की अपेक्षा आँख का बहुत महत्त्व है। प्राचीन काल में तो ज्ञान को सुनकर ग्रहण किया जाता था। स्मृति शक्ति ठीक हो तो ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। श्रुति के साथ स्मृति जुड़ जाए तो ज्ञान याद रह सकता है।

प्राचीन काल में तो गुरु परंपरा से बिना लिखे ज्ञान चलता रहा है। पर बाद में लिखने की परंपरा शुरू हो गई। स्मृति धीरे-धीरे कमजोर होने लगी। लिखा हुआ तो कभी भी कोई भी पढ़ सकता है। कोरे ग्रंथों से पूरा ज्ञान नहीं हो पाता, पढ़ाने वाला गुरु भी चाहिए। इसलिए गुरु-शिक्षक का महत्त्व है। उच्चारण-शुद्धि भी गुरु ही करा सकता है। एक बिंदु-मात्रा के फर्क से अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

अध्ययन में तीन चीजें चाहिए—पढ़ाने वाला जानकार हो, पढ़ने वाला प्रतिभाशाली हो और साथ में पुस्तक-लेखन सामग्री भी हो। तीनों के होने से विद्यार्थी का अच्छा विकास हो सकता है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी अनुशास्ता होने के साथ पढ़ाते भी थे। एक व्यक्ति के अनेक पर्याय हो सकते हैं। हम सुनकर गुरु से ज्ञान प्राप्त करें। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान भीतर के अंधकार को दूर करने वाला हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि पर विशेष

मंगलमय शासनमाता में निहित थी मंगल शक्तियाँ

❐ साध्वी स्वर्णरेखा ❐

विश्व की सत्ता, विश्व का अधिष्ठान तथा विश्व की जटिल संरचना में पुण्य भूमि भारत ऐसा देश है, जहाँ छः ऋतुओं के अनुपम विलास की छटा है, अमृतोपम मधुरजल धारिणी कल-कल नादिनी गंगा भी प्रवाहित है, उत्तुंग धवलशिखर से नभोमंडल का स्पर्श कराने वाला हिमालय है। विश्व के अन्य देश जहाँ भोगभूमि के रूप में ख्यात है वहीं भारत भूमि त्याग, वैराग्य की आधारशिला रही है। जहाँ महापुरुषों की दिव्य अलौकिक ऊर्जा अंधेरी निशा को प्रखर करती हुई चेतना को सतत् प्रकाशित करती है। पुरुष के प्रधानत्व में नारी शक्ति ने साधन की। अंतः चंद्रिका से चंद्रित होकर संसार में शीतलता, शांति, आनंद की दिव्य दृष्टि करते हुए अपनी प्रज्ञा से परमात्म तत्त्व का प्रकाश फैलाया है उसमें तेरापंथ की अष्टम साध्वीप्रमुखा 'शासनमाता' का नाम निग्रह की तपस्या, पौरुष का प्रतीक है, जिन्होंने अपने आचरण से जीवन के शाश्वत मूल्य को परिभाषित किया, स्वयं अपने में रहते हुए गुरु के संदेश को हृदयंगम किया गुरु इंगित में निहित अर्थ एवं आज्ञा की शक्ति से सब पर मधुर अनुशासन किया। मधुर स्नेह की आलोक यात्रा से सबको आलोक का वरण करवाया। समुद्र तल से लेकर आकाश तक फैला स्नेह का बंधन ही सबको गतिशील रखता है, स्नेह के इस बंधन में विराग का चिराग प्रतिबिंबित होता था। गति केवल पाँवों की नहीं होती आँखों की भी होती है। आँख मनुष्य के लिए उपहार है परंतु बिना दर्पण की सहायता से एक आँख दूसरी आँख को नहीं देख सकती। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी की मंगल शक्तियाँ दर्पण बनकर बाह्य जगत के साथ अंत जगत का भी अवबोध कराती। असाधारणता के शिखर तक पहुँचाने वाली मंगल शक्तियाँ थीं।

शब्द शक्ति—शब्दों की नाट्यशाला में भाव दृश्य का जीवंत अभिनय था, रंग विन्यास के साथ साज-सज्जा भी थी, शब्दों की काया का निरूपण सिर्फ स्थूल परिक्रमा है। सूक्ष्म से साक्षात्कार कराने वाले महाश्रमणी जी हर खंड में अखंड पूर्णता का एहसास कराने वाले थे, जैसे टूटा हुआ दर्पण खंड-खंड हो जाने पर भी अपने प्रतिबिंबित होने के गुण को खंडित नहीं होने देता वैसे ही शासनमाता का हर शब्द टूटे हुए मन को जोड़ देता है। गहराई युक्त विचारों में शांति, सद्भावना, प्रेम का संदेश मिलता है तथा श्रेय के सृजन का संकल्प गतिशील बन जाता है।

कल्पनाशक्ति—कवि जिस वस्तु को देखता है उसी का यथावत् वर्णन नहीं कर देता यदि वह कर दे तो काव्य और फोटोग्राफी में अंतर ही नहीं रहता। कवि वस्तु को देखकर अपनी कल्पना के अनुसार वर्णन करता है। काव्य अनुबंध की अनोखी दृष्टि शासनमाता के कवित्व का सहज परिचय करवाती थी। कल्पनाशील कल्पनाएँ यथार्थ का संदेश देती, जिस असाधारण कवियत्री ने शिल्प एवं संवेदना से लोकमानस को तृप्ति का अनुपान करवाया। विचारों की गहराई, साहित्य की सुषमा, दर्शन का सत्व काव्य को जीवंत बनाए हुए हैं। हजारों पन्नों की छाती पर अपनी कलम से नृत्य करवाया। काव्य साहित्य भले ही गीत हो या गज़ल, कविता हो या कहानी, गद्य हो या पद्य रसात्मकता एवं रचनात्मकता के साथ सौंदर्य बोध कराता है। विराट को वामन में समेटने की अद्भुत कला थी।

आकर्षण शक्ति—मन की निर्दोषता और पवित्रता नैसर्गिक रूप से स्पष्ट झलकती थी। भेद मुक्त मन मूर्छा से मुक्त होने के कारण सहज सौंदर्य का अवबोध कराता। आकर्षण शक्ति का मुख्य कारण गुण सौंदर्य एवं विद्या सौंदर्य था। हर घट की भित्ति पर चमकते हुए जन-जन की जिह्वा एवं हृदय में समाए हुए थे। अवगुण के चक्रव्यूह में नितांत अकेले रहते। सूने नीड़ एवं रिक्त दीप में स्नेह क्षण प्रदान करके सदाचार और दुराचार सत्य और असत्य के बीच अस्मिता एवं अस्तित्व को कायम रखते हुए संस्कार के सुविशाल क्षितिज की प्रतीति कराते। शांति एवं शीतलता से मंडित आभामंडल इतना सशक्त था कि चुंबकीय आकर्षण शक्ति से सबको अपनी ओर खींच लेता। फूलों भरे हर मन की संवेदना को सहलाकर काँटों की चुभन झेलकर पीड़ित नहीं होते थे क्योंकि सहनशक्ति नैसर्गिक रूप से वरदान में प्राप्त उपहार थी।

सहनशक्ति—सहनशक्ति आत्मबल का मापदंड बनती है, आत्मा का भूषण है, आत्मदीप बनकर प्रतिपल प्रकाश में जीते रहने का दृढ़ संकल्प है जो अंतःकरण के अंधेरे को दूर करती है तथा समभाव और तटस्थवृत्ति को उजागर करती है। मध्यस्थता की मंगल मूर्त किसी के कठोर व्यवहार से, प्रतिकूल आचरण से, दुर्वचनों के प्रहार से रंग मात्र भी विचलित नहीं होते थे। सहनशीलता को जीवन के हर प्रभाव के साथ जोड़ लिया, हर परिवेश में उसका स्वागत किया। कठोर संघर्षमय जीवन जीकर उपलब्धियों को प्राप्त किया। सहनशक्ति के विरल पलों में स्खलनाएँ शेष ही नहीं रही। चेतना का कुल कगार देख लेने की उदाम लालसा से हर पल आज्ञा इंगित की अनुपालन में लालायित रहते। आस्था अदृश्य संबल प्रदान करती रही। निरंकुश इच्छाएँ चित्त की चंचलता स्वतः निष्फल हो गई। ऐसी महाशक्तियों की दायिनी शासनमाता ने शक्तियों के प्रवाह से झीनी-झीनी नीरवता का पान मानवता को खूब कराया, उस विचार सिंधु से निकले अमृततत्त्व से हम भी अंतः स्थल की गहराई में उतरने का प्रयास करें तभी आदर्शमय जीवन की पोथी के कुछ अक्षरों को पढ़कर जीवन को गढ़ सकते हैं।

अर्हम्

● साध्वी स्वस्तिकप्रभा ●

किन पावन परमाणु पुंज से निर्मित था व्यक्तित्व तुम्हारा।
जिसने पाई सुखद सन्निधि उसने अपना भाग्य संवारा।।

कर्मठ हाथों ने गणवन में 'नूतन पारिजात' संकल्पों के सुमन खिलाएँ,
आगम सोची सूझबूझ से मुश्किल पथ आसान बनाएँ,
टूटी-बिखरी आस्थाओं को दें आलंबन सदा उबारा।।

लक्ष्यभ्रमित मानव को तुमने मंजिल का अहसास कराया,
दर्दिल आम-खास सब जन को स्नेहदान देकर सहलाया,
साँस-साँस में संघभक्ति का बजता रहता था इकतारा।।

बौद्धिकता अरु विनयशीलता रहीं सदा बनकर सहचरी,
सहज सरलता निष्पृहता से गुरु-दिल स्थान बनाया भारी,
अर्हताएँ देख अलौकिक गुरुओं ने तुमको सत्कारा।।

ककहरा जीवन-विकास का सीखा मैंने पास तुम्हारे,
प्यासी अंखियाँ दर्शन पाने ढूँढ़ रही हैं गगन सितारे,
यादों की रील निरंतर चलती नजर न आए कहीं किनारा।।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर

अर्हम

● साध्वी प्रेक्षाप्रभा ●

आनंददायिनी थी, शिव शुभ चांदनी थी
संयम छटा, सुरभि लुआ सृजन स्वामिनी थी
भक्तों के नयनों में बसी वह दिव्य वादिनी थी।।

भैक्षव गण को महकाया, विकसाया,
निज आत्म संपदा से, कण-कण सरसाया।
आलोक दिया समता का, क्षमता का,
ममता मूरत ने, अमृत रस बरसाया।।

गुरु तुलसी की कृति पावन, मनभावन,
श्री महाप्रज्ञ शासन में रही बन सावन।
जय ज्योति चरण गुण गाया, सिर साया,
श्री, ह्री, धी, धृति गुण सुमनों चमन सजाया।।

आधी दुनिया की शक्ति गुरु भक्ति,
पल्लव-पल्लव में भरती गण अनुरक्ति।
शासन माता संबोधन, खिला गुलशन,
जय-विजय भाग्यश्री लुटती चरणों हर क्षण।।

लय : क्या खूब लगती हो---

अर्हम्

● साध्वी प्रशमयशा ●

श्रुत का निर्झर, बहता अविरल, असाधारण छाँव तले।
गुरु-दृष्टि सबल, तेरी भक्ति अमल, श्रद्धा के फूल खिले।।

वात्सल्य भरे आंचल में, नंदन-कलियाँ खिल जाती।
प्रशिक्षण की तस्वीरें, यादों में उभर कर आती।
आश्वास मिला, विश्वास जगा, विकास की डगर चले।।

हर लब पर गूँज रहा है, गण की थी एक नजीर।
मनहर सतरंगी-आभा, से सजी कितनी तकदीर।
तेरे पुण्य प्रकाम, सेवा निष्काम, हर पल नवदीप जले।।

गुरु त्रय की प्रभुता पाकर, तुम चमके बन ध्रुवतारे।
साध्वीप्रमुखा शासन के, साक्षी अम्बर के तारे।
तब चरण बढ़े, गण शिखर चढ़े, गणिवर अरमान फले।।

श्रम-संयम-साधना से, लिखी अनुपम कई कहानी।
मातृत्व भरा नेतृत्व, ज्योतिर्मय था वरदानी।
महका ये चमन, अवनि व गगन, वे शासनमाता मिले।
वार्षिक पुण्यतिथि, पावन है स्मृति, श्रद्धांजलि स्वर निकले।।

लय : आ चल के तुम्हें

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

✦ *ज्ञानवान व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधायक बन सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *तुम दूसरों को पहचानो इसमें आपत्ति नहीं पर स्वयं को भी पहचानने का प्रयास करो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेममं की स्वर्ण जयंती वर्ष का कार्यक्रम

भिक्षु निलयम, राजनगर।

भिक्षु निलयम में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेममं की स्वर्ण जयंती वर्ष-२०२२-२३ के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि नारी विश्व की एक शक्ति है, महाशक्ति है। नारी की तरक्की सारे संसार की तरक्की है। महिलाओं का अतीत गौरवशाली रहा है उनका वर्तमान खूबसूरत है। नारी का भविष्य देश, समाज, संघ, राष्ट्र का सुखद भविष्य बने।

आपने आगे कहा कि एक दिन ऐसा आए जब मोक्ष नगर का नोबल अवार्ड हमारे पास हो, उसके लिए अनुचिंतन करें कि मुझे हलुकर्मी बनना है, मुझे राग-द्वेष की ग्रंथियों से मुक्त होना है, मुझे आत्मा के आसपास रहना है।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुई, उसके पश्चात् ५१ महिला मंडल की बहनों ने 'महाश्रमण अष्टकम्' से मंगलाचरण किया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा डॉ० सीमा कावड़िया ने राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया एवं उनकी टीम और उपस्थित जनमेदिनी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में कन्या मंडल ने एक अच्छी प्रस्तुति प्रस्तुत की। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने अतीत और वर्तमान की यादों को समेटते हुए बहुत ही रोचक प्रस्तुति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना बैद, महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया, कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, विकास परिषद के सदस्य पद्मचंद पटावरी, अणुव्रत गौरव महेंद्र कर्णावट ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि गुरुदेव तुलसी का विजन रहा कि हर नारी का उत्थान हो। ५० सीढ़ियों की हर ईंट पर, हर पत्थर पर शासनमाता का नाम है। राजनगर का हमेशा एक विशिष्ट इतिहास रहा है और अपने रमणीय अनुभवों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन सीमा चपलोत और मंत्री डिंपल कर्णावट ने किया।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन आदर्श विद्या मंदिर स्कूल में किया गया।

सहमंत्री सुमन कोठारी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया। उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और उससे होने वाले लाभ को बताया।

डिंपल सालेचा ने कहानी के माध्यम से 'ईमानदारी और सत्य' पर बच्चों को बताया कि कोई व्यक्ति जन्म से महान नहीं बनता, व्यक्ति अपने विचारों, ईमानदारी एवं सच्चाई से महान बनता है। जब भी हम ईमानदारी से कोई भी काम करते हैं तो किसी से डर नहीं लगता और एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है।

विद्यालय के विद्यार्थियों से महात्मा गांधी के जीवन के 'ईमानदारी और सत्य' के किस्से भी सुने गए। रक्षा सालेचा ने बताया कि कैसे हम अपने आस-पड़ोस को स्वच्छ रख सकते हैं, वर्तमान मौसम से होने वाली बीमारी से अपने आपको कैसे सुरक्षित रखें इसकी जानकारी दी और अंदर एवं बाहर की स्वस्थता के लिए अनुप्रेक्षा का प्रयोग भी करवाया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेंद्रपाल ने महिला मंडल जसोल का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने किया।

संस्कार निर्माण परियोजना

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण परियोजना के अंतर्गत उम्मीद-एक बेहतर कल की कार्यशाला का अंतिम चरण राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सिंधु नगर, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय शास्त्रीनगर एवं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर नगर में तृतीय चरण प्रोजेक्ट संयोजिका विमला रांका, स्नेहलता झाबक, पायल बुलिया एवं टीम द्वारा संपादित हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से एवं पुष्पा पामेचा के मंगलाचरण से हुआ। सिंधुनगर विद्यालय में कार्यशाला के इस अंतिम चरण में राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल की उपस्थिति रही और आपने बच्चों को सुपर मॉडल के साथ अच्छा विद्यार्थी बनने का संकल्प करवाया।

महिला मंडल की अध्यक्षा मीना बाबेल ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें निरंतर अपनी लक्षित मंजिल की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

मंत्री रेणु चोरड़िया ने स्वागत स्वर व्यक्त किया। प्रेक्षा नौलखा, परिधि चंडालिया, नेहा ओस्तवाल ने व्यसन पर आधारित नाटिका एवं उषा सिसोदिया ने इस विषय पर विचारों की प्रस्तुति दी। सपना बाबेल ने मीठी वाणी पर विचार एवं विजया सुराणा ने गत कार्यशालाओं में जो सीखा उनको जीवन में उतारकर जीवन में सफल बनने पर विचार व्यक्त किए।

स्विटी नैनावटी, आनंद बाला टोडरवाल ने महाप्राण ध्वनि एवं माता-पिता की आज्ञा का पालन, कनकलता गोखरू ने मीडिया का सही उपयोग कैसे हो विषय पर प्रस्तुति दी। महाप्राण मुद्रा पुष्पा नौलखा, सरोज चोरड़िया ने अनुप्रेक्षा प्रयोग एवं किरण ओस्तवाल ने योग से कैसे बने रोग मुक्त पुस्तकों का विद्यार्थी जीवन में महत्त्व एवं महात्मा गांधी पर विचार डॉ० राजमती सुराणा ने रखे।

रश्मि नैनावटी ने सिंधुताई सपकाल जैसी महान शख्सियत का जीवन चरित्र बच्चों को बताया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि शोभना सिरोहिया, चंदा खाब्या, स्नेहलता, पितलिया, चाँदनी रांका ने कार्यक्रम का संचालन किया।

यशवंत सुतरिया, सुधा पोरवाल, मधु ओस्तवाल, ममता चिपड़, टीना मांडोत, अमिता बाबेल, मीना दुगड़, करुणा चौधरी सभी बहनों की उपस्थिति से कार्यशाला सफल हुई।

सिंधुनगर विद्यालय की टीचर सुनीता डांगी ने तेममं के इस कार्यक्रम की सराहना की और सभी बहनों का आभार ज्ञापित किया।

हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल द्वारा लघु नाटिका की प्रस्तुति रही।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रबुद्ध हिंदी साहित्यकार एवं अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित बी०एल० आच्छा को आमंत्रित किया गया। मुख्य वक्ता का परिचय सहमंत्री कंचन भंडारी ने दिया।

बी०एल० आच्छा ने कहा कि आज हम प्राकृतिक जीवनशैली से दूर होकर धर्म से दूर हो रहे हैं। मानसिक, वाचिक और कायिक हिंसा से बचने का प्रयास करें। अनेक कथा एवं उदाहरण के माध्यम से हिंसा-अहिंसा की परिभाषा को प्रस्तुत किया। तत्त्व प्रचेता दीपाली सेठिया ने तत्त्वज्ञान की भाषा में हिंसा और अहिंसा की पहचान के कई सूत्र बताए एवं कालू तत्त्व शतक बोर्ड गेम के माध्यम से अनेक प्रश्न-उत्तर किए।

हिंसा-अहिंसा विषय पर वीडियो मेकिंग प्रतियोगिता रखी गई। उसमें प्रथम स्थान वंदना पगारिया का, द्वितीय स्थान रक्षा आच्छा ने प्राप्त किया तथा स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सुभद्रा लुणावत ने, द्वितीय स्थान राजेश्वरी रांका ने प्राप्त किया। सभी प्रतिभागी बहनों को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। मुख्य वक्ता बी०एल० आच्छा का भी महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री लता पारख ने दिया।

कर्म विज्ञान पर आधारित बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, बालोतरा के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में कर्म विज्ञान पर आधारित बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि बालोतरा की बहनों में तत्त्वज्ञान के प्रति अच्छा रुझान है और यह रुझान और बढ़ता रहे। इस प्रतियोगिता में ८ ग्रुप बनाए गए। हर ग्रुप में २ प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुल १६ प्रतिभागियों ने भाग लिया। महाश्रमण तत्त्वज्ञान सेंटर के अध्यक्ष कविता सालेचा व तत्त्वज्ञान श्राविका, महिला मंडल सदस्य सरिता बालड़ ने रोचक तरीके से प्रतियोगिता करवाई। सभी प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह एवं अच्छी तैयारी के साथ भाग लिया। प्रथम स्थान पर कन्या मंडल से मुस्कान वेद मेहता, दूसरे स्थान पर पिंकी सालेचा, तीसरे स्थान पर ममता ओस्तवाल रहे। कालू तत्त्व शतक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय विजेताओं एवं सभी संभागियों को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड, रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग ८० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

'द पॉवर ऑफ साइलेंस' कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, जसोल द्वारा साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में 'द पॉवर ऑफ साइलेंस कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की गई। महिला मंडल ने 'प्रेरणा गीत' से मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्षा सोहनी देवी सालेचा ने सभी का स्वागत किया और बताया कि व्यक्ति को कब, कैसे क्या बोलना चाहिए? इसका ध्यान रखना चाहिए। उपासिका लीला देवी सालेचा ने बताया कि मौन केवल बातों से ही नहीं बल्कि विचारों में भी होना चाहिए।

साध्वी विजयप्रभा जी ने कहा कि मौन से अपनी शक्ति को बढ़ा सकते हैं, जहाँ जरूरत हो वहाँ बोलें, मीठा बोलना चाहिए, इशारों से काम हो जाए तो वहाँ बोलकर अपनी शक्ति को खर्च नहीं करना चाहिए।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने एक कहानी के माध्यम अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने कहा कि हमें हमारी जबान में शुगर फैक्ट्री और दिमाग में आईस फैक्ट्री रखनी चाहिए। अंत में उपासिका लीला देवी सालेचा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला का संचालन मीना गोलेच्छा ने किया। महिला मंडल की उपस्थिति सराहनीय रही।

✦ *अभय के साथ क्षमा का योग है तो वह अभय का अलंकार है, शृंगार है। यदि उसके साथ आक्रोश जुड़ जाता है तो वह धब्बे वाले वस्त्र जैसा बन जाता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अष्टम आचार्य कालूगणी के जन्मदिवस पर कार्यक्रम

कीर्तिनगर।

अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के जन्मदिवस एवं अणुव्रत के ७५वें वर्ष के उपलक्ष्य में अपने हार्दिक उद्गार व्यक्त करते हुए उग्रबिहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कीर्तिनगर में निर्मल सुराणा के निवास स्थान पर कहा कि पूज्य कालूगणी अपनी माँ की इकलौती संतान थी। माँ को सोलह वर्षों बाद संतान की प्राप्ति हुई। जन्म के कुछ समय बाद पिताजी का स्वर्गवास हो गया। माता ने पीहर में रहकर संतान का पालन-पोषण किया।

मात्र १० वर्ष की अवस्था में बालक कालू ने अपनी माता छोगांजी के साथ तेरापंथ धर्मसंघ के पंचम आचार्य मघवागणी से बीदासर में दीक्षा स्वीकार की, संत बनते ही आपने अपने आपको अध्ययन साधना में लगा दिया। मघवागणी, माणकगणी, डालगणी सबके दिल में आपने अपना गहरा स्थान बना लिया। डालगणी ने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। आपने देश-प्रदेश की यात्राएँ कर संघ की खूब श्रीवृद्धि की। गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी आपके द्वारा दीक्षित हुए जो तेरापंथ धर्मसंघ के नवमें, दशवें आचार्य रूप में हमें प्राप्त हुए आचार्य महाश्रमण जी भी आपका स्मरण जप करके दीक्षा के लिए तत्पर बनें।

आचार्यश्री तुलसी ने अपने गुरुदेव के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक आंदोलन का सूत्रपात किया, जिसे अणुव्रत आंदोलन से जाना जाता है। इस असांप्रदायिक आंदोलन से तेरापंथ समाज और आचार्यश्री तुलसी की गरिमा-महिमा बढ़ी है, वह अपने आपमें अनुपम है। इस अवसर पर उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्य प्रकाश शामसुखा, मांगीलाल छाजेड़ ने भी अपने विचार प्रकट किए।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला संपन्न

उत्तर कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी के सदस्यों द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन ओसवाल भवन मध्य उत्तर कोलकाता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि शरीर का विकास खानपान से होता है। मन का उल्लासमान-सम्मान से होता है, बुद्धि का प्रकाश ज्ञान-विज्ञान से होता है, आत्मा का आभास ध्यान समाधान से होता है।

ध्यान ज्योति व प्रकाश की साधना है। स्वभाव परिवर्तन तनावमुक्ति मानसिक स्वास्थ्य की साधना है। मुनिश्री ने आगे कहा कि जिस प्रकार शरीर में मस्तिष्क का वृक्ष के मूल में जड़ का मूल्य है उसी प्रकार धर्म साधना में ध्यान का मूल्य है। ध्यान कर्म निर्जरा व आत्मशोधन की प्रक्रिया है। ध्यान के द्वारा अनेक शक्तियों को उद्घाटित किया जा सकता है।

ध्यान को आभ्यंतर तप कहा है। ध्यान का अर्थ है किसी एक वस्तु पर मन को केंद्रित करना, आत्मा से रमण करना। जागरूकता का नाम ध्यान है। ध्यान में एक ध्यान है–प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है।

मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। प्रेक्षावाहिनी के सदस्यों ने प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया। इससे पूर्व प्रेक्षाध्यान के प्रयोग प्रशिक्षक राकेश सिंघी, मनीषा नाहटा। मंगलभावना लक्ष्मी लता बेद ने कराया। आभार ज्ञापन अरुण नाहटा ने किया।

प्रज्ञा संपन्न विलक्षण महापुरुष थे आचार्य महाप्रज्ञ

नोखा।

इस सदी के महापुरुष थे आचार्य महाप्रज्ञ। वे बचपन से ही प्रतिभासंपन्न थे। उनकी साधना, ध्यान, योग और विद्वतापूर्ण अद्भुत थी। तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य थे। नत्थू से नथमल फिर महाप्रज्ञ और आचार्य तुलसी ने अपनी मौजूदगी में ही आचार्य महाप्रज्ञ बनाकर इतिहास बना दिया। आज भी उनके प्रवचन, पुस्तकें अध्यात्म और विज्ञान की सार्थकता सिद्ध करती हैं। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने आचार्य महाप्रज्ञ की मासिक पुण्य तिथि पर रखे।

साध्वी पुलकितयशा ने गुण संपन्न, रूप संपन्न और कुल संपन्न व्यक्ति को अहंकार से बचने की प्रेरणा दी। पूर्व पुण्याई से शुभ योग से वर्तमान अच्छा है किंतु आगे के लिए धर्म-ध्यान आवश्यक है।

कार्यकर्ता इंदरचंद बैद ने बताया कि श्रावक-श्राविका सभी आलस्य-प्रमाद छोड़ प्रवचन का लाभ उठाएँ, जिससे तनावमुक्त जीवन जीना सीखें।

योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

अनिल बैद दिल्ली राधेपुरी प्रवासी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा, हेमराज राखेचा, सौरभ आंचलिया, हितेश सुराणा ने पूरे मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत रूप से संपादित करवाया।

परिवार की तरफ से दीपक नाहर ने पधारे हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार ज्ञापित किया।

गंगाशहर।

राजेंद्र, संगीत-दर्शन बोथरा के नवीनीकृत नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन छाजेड़, देवेंद्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

संतोष बोथरा ने तेयुप, गंगाशहर व जैन संस्कारकों को कार्यक्रम करवाने के लिए आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

पाली।

नितिन कोठारी-मनीषा कोठारी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक भूपेश तातेड़, जितेंद्र गोगड़, बसंत जैन, ऋषभ श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ गृह प्रवेश कार्यक्रम संपन्न करवाया।

परिवार से अशोक कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

पाणिग्रहण संस्कार

उदयपुर।

मुंबई निवासी चि० प्रतीक पी० जैन, सुपुत्र पारस बी० जैन का पाणिग्रहण संस्कार जैन संस्कार विधि से इंदौर निवासी स्थानकवासी जैन परिवार की सौ० किंजल जैन सुपुत्री अक्षय जैन के साथ संस्कारक सुबोध दुगड़ ने संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला ने संक्षेप में जैन संस्कार विधि के बारे में बताया एवं दोनों ही परिवारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

सगाई संस्कार

फरीदाबाद।

गुलाबचंद बैद और ललिता बैद के सुपुत्र रोहन बैद एवं धनराज डागा और सरिता डागा की सुपुत्री तनुश्री के साथ सगाई समारोह, जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, राजेश जैन व जितेंद्र लुनिया ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

सभा अध्यक्ष गुलाबचंद बैद ने सभी पधारे हुए परिवारजनों व मेहमानों का तथा संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

जल शुद्धिकरण संयन्त्र का उद्घाटन

विजयनगर।

अभातेयुप निर्धारित त्रिआयामी लक्ष्यों की ओर सतत् गतिमान है। इसी कड़ी में बैंगलोर से लगभग १३५ किलोमीटर दूर तेयुप, विजयनगर द्वारा निर्मित येलियूर प्रज्ञा केंद्र के सरकारी स्कूल में परिषद् संगठन मंत्री स्वर्गीय कुलदीप बागरेचा की स्मृति में विजयनगर क्रिकेट क्लब एवं परिषद प्रबंध मंडल के सहयोग से जल शुद्धिकरण संयन्त्र लगवाया गया।

उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस गोलछा, विकास बांठिया एवं कमलेश चोपड़ा द्वारा निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा किया गया।

तेयुप, विजयनगर से पूर्व अध्यक्ष महावीर टेबा, कोषाध्यक्ष आलोक गंग, सेवा कार्य संयोजक दिनेश मेहता, कार्यसमिति सदस्य मनोज बरड़िया, राकेश श्यामसुखा, विमल पारख, पीयूष हीरावत, पंकज कोचर, स्कूल के प्रिंसिपल, सभी शिक्षक, अन्य स्टाफ व बच्चों की उपस्थिति रही।

✦ *तुम दूसरों को पहचानो इसमें आपत्ति नहीं पर स्वयं को भी पहचानने का प्रयास करो।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता अष्टम साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी : जीवन-परिचय

जन्म : वि.स. 1998, श्रावण कृष्णा त्रयोदशी, 22 जुलाई 1941, कोलकाता
दीक्षा : वि.स. 2017, आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा, 8 जुलाई 1960, केलवा
साध्वीप्रमुखा : वि.स. 2028, माघ कृष्णा त्रयोदशी, 14 जनवरी 1972, गंगाशहर
महाश्रमणी अलंकरण : वि.स. 2035, माघ शुक्ला सप्तमी, 3 फरवरी 1979, राजलदेसर
महाश्रमणी पद : वि.स. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी, 1 सितम्बर 1989, लाडनूं
संघमहानिदेशिका : वि.स. 2049, कार्तिक शुक्ला द्वितीया, 8 नवम्बर 1991, लाडनूं
असाधारण साध्वीप्रमुखा : वि.स. 2073, श्रावण कृष्णा चतुर्दशी, 1 अगस्त 2016, गुवाहाटी
शासनमाता सम्मान : वि.स. 2078, माघ कृष्णा त्रयोदशी, 30 जनवरी 2022, लाडनूं
महाप्रयाण : वि.स. 2078, फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी, 17 मार्च 2022, दिल्ली

कर्तृत्व के उजले पृष्ठ

- **आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण के नेतृत्व में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के साध्वी–समुदाय का 50 वर्षों से अधिक समय तक कुशल संरक्षण एव दिशादर्शन।**
- **संयम प्रदान :–** साध्वीश्री श्रेयस्करीजी (श्रीडूंगरगढ़) सन् 1999, लाडनूं
- **अनशन का प्रत्याख्यान :**

  सा. प्रमोदश्रीजी (पड़िहारा)
  सा. जसूजी (नोहर)
  सा. विनयश्रीजी (लावा सरदारगढ़)
  सा.. चम्पाजी (सादुलपुर)
  सा. सजनांजी (देशनोक)
  सा. श्रेयस्करीजी (श्रीडूंगरगढ़)

- **चाकरी :**

  सन् 1991–1992, लाडनूं सेवाकेन्द्र

- **यात्रा :**

  दीक्षा के बाद (लगभग 61 वर्ष) विशेष प्रसंगों/परिस्थितियों को छोड़कर प्रायः गुरूकुलवास में यात्रायित। इस दौरान भारत में अनेक राज्यों तथा नेपाल–भूटान की यात्रा।

विशेष : प्रेक्षा यात्रा :

समय – 51 दिन (फरवरी–मार्च 1992)
स्थान – लाडनूं से बीकानेर
उद्देश्य – सेवाकेन्द्र की देखभाल

आहार संयम साधना :– (विविध प्रयोग)

वि.स. 2026 – 1 अठाई, बैंगलूरू
वि.स. 2029 – 1 तेला, चुरू
वि.स. 2030 – 27 दिन तक सफेद द्रव्य लेना, तेले के साथ अनुष्ठान संपन्न, हिसार
वि.स. 2032 – 1 मास लगातार एकाशन, लाडनूं
वि.स. 2032 तक प्रायः प्रहर (दीक्षा के बाद से)
वि.स. 2033 में वि.स. 2072 तक – सावन मास में प्रहर (वि.स. 2008 को छोड़कर)
वि.स. 2033 में विशिष्ट प्रयोग – 1 अन्न लेना।
वि.स. 2033 से प्रतिसमय 9 से अधिक द्रव्य ने लेने का संकल्प।
वि.स. 2039 से विशेष परिस्थिति को छोड़कर चीनी तथा कड़ाई विगय का वर्जन।
सन् 2008 में – 1 द्रव्य से 15 द्रव्य तक, पुनः व्युत्क्रम से 15 द्रव्य से 1 द्रव्य ग्रहण करना।
सन् 2022 – यावज्जीवन (पानी एवं औषध के अतिरिक्त) प्रतिदिन 15 द्रव्यों की सीमा।

साहित्य साधना :

1. आगम अनुवाद कार्य में सहभागिता
2. 93 पुस्तकों का सम्पादन
3. 51 पुस्तकों का आलेखन
4. जीवन के अन्तिमकाल में तेरापंथ के इतिहास के अंतर्गत आचार्यश्री तुलसी के जीवनवृत्त का आलेखन गतिमान।

स्वाध्याय साधना (कण्ठस्थ राशि)

आगम :

1. दसवेआलियं
2. आयारो
3. पण्हावागरणाइं (संवरद्वार)
4. उत्तरज्झयणाणि – 1–16 अध्ययन तथा 32वां अध्ययन
5. सूयगडो का छठा अध्ययन – महावीरत्थुई।

व्याकरण :

1. प्राकृत व्याकरण – तुलसी मञ्जरी (सवृत्ति)
2. संस्कृत व्याकरण – कालू कौमुदी (सवृत्ति)
3. श्रीभिक्षुशब्दानुशासनम् (सूत्र)

संस्कृत शब्दकोश :

अभिधानचिन्तामणि

संस्कृत ग्रंथ एवं काव्य :

1. जैन सिद्धांत दीपिका
2. श्रीभिक्षु न्याय कर्णिका
3. मनोनुशासनम्
4. शान्तसुधारस भावना
5. सिन्दूरप्रकर
6. पंचसूत्रम्
7. दृष्टान्तशतकम्
8. नीतिशतकम्
9. षड्दर्शनसमुच्चय
10. शिक्षाषण्णवतिः
11. चतुर्विंशति गुणगेयगीति
12. कल्याण मंदिर
13. भक्तामर
14. अयोगव्यवच्छोदिका
15. अन्ययोगव्यवच्छोदिका
16. कर्त्तव्यट्त्रिंशिका
17. संघषट्त्रिंशिका
18. परमात्म द्वात्रिंशिका
19. रत्नाकर पञ्चविंशिका
20. अष्टकम् एवं स्तोत्र आदि।

प्राकृत पद्यात्मक रचना :

1. आलम्बन सूत्र
2. गौतमकुलकम्

हिन्दी पद्यात्मक रचना :

1. आचार बोध
2. संस्कार बोध
3. व्यवहार बोध
4. श्रावक सम्बोध
5. अध्यात्म पदावली
6. अर्हत् वाणी

राजस्थानी पद्यात्मक :

1. शील की नवबाड़
2. आराधना
3. चौबीसी
4. तेरापंथ प्रबोध
5. तुलसी प्रबोध

तात्त्विक थोकड़े :

1. जैन तत्त्व प्रवेश
2. इक्कीस द्वार
3. बावन बोल
4. लघुदण्डक
5. तेरहद्वार
6. तत्त्वचर्चा
7. कालू तत्त्व शतक
8. 25 बोल

अन्य – अनेक गीतिकाएं, संस्कृत श्लोक, हिन्दी–राजस्थानी पद्य आदि।

प्रस्तुति : साध्वी स्वस्तिकप्रभा

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर उद्गार

पौरुष और समर्पण की नजीर

● **साध्वी सुषमाकुमारी** ●

शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी इस तेरापंथ धर्मसंघ की महान विभूति थी। जिन्होंने अपने जीवन काल के ५० वर्ष तक साध्वीप्रमुखा के रूप में गुरुत्रय की हार्दिक समर्पण से सेवा की। अपनी शक्तियों को जगाया। उच्चता के शिखर पर आरोहण किया। संघ में नए-नए काम किए। साध्वी समाज में ज्ञान के नए क्षितिज खोले। वाक् कौशल बढ़ाने हेतु उन्मुक्त मैदान दिया। आज किसी भी क्षेत्र में देखें तुम्हारी पावन सन्निधि में अनेक साध्वियों ने विकास के नए परचम फहराए। तुमने अपने हाथों से एक-एक साध्वियों पर वात्सल्य की धारा बहाई। जीवन को संवारा, दिया उत्तम जीवन जीने का सहारा।

महिला समाज को जिस रूप में तुमने खड़ा किया, आधी दुनिया, तुम्हारी ऋणी रहेगी। महिलाओं के विकासशील सुंदर स्वरूप में शासनमाता का पौरुष बोल रहा है। उनकी उत्तम सार-संभाल का उत्कृष्ट नमुना है विकासशील महिला समाज।

अपने आराध्य देवता गुरुदेव तुलसी तुम्हारी हर साँस में बोलते थे। जिस समय लाडनूं में साध्वी जसू जी महासतियाँ जी को अनशन का प्रत्याख्यान करवाया तो ऐसा लग रहा था सचमुच ही गुरुदेव तुलसी बोल रहे हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञ और गुरुदेव महाश्रमण जी को जिस तरह तुमने निश्चिंत बनाया। आज इतिहास की धरोहर बन गई। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के शब्दों में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी विदुषी हैं। विनय और समर्पण में प्रथम नंबर हैं। आचार्यश्री महाश्रमण जी के शब्दों में साध्वीप्रमुखा हमको तो गढ़ी-गढ़ाई, नपी-नपाई, बणी-बणाई मिली है।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी ने जीवन के अंतिम क्षणों का जो इतिहास बनाया दुनिया का दस्तावेज बन गया। समता की सरिता प्रवाहित हो गई। दुनिया में सहिष्णुता का रॉल मॉडल प्रस्तुत कर दिया।

तुमने तीनों गुरुओं को जितना समर्पण दिया उससे कई अधिक कृपा का बल पाया। गुरुदेव ने आपको निकटस्थ जितनी सेवा कराई वे क्षण अपने आपमें अमूल्य बन गए। संघ की थाती बन गए। धन्य कृत पुण्य बन गए।

तुम्हारा कर्तृत्व और व्यक्तित्व अनुपम था। लेखन और वक्तृत्व अनुपम था। अनुशासन और वात्सल्य अनुपम था। शक्ति और धृति अनुपम थी तभी तुमने अनुपम व्यक्तित्व तैयार किए। संघ को अनुपम सेवाएँ दी। अपने संस्कारों की सुरभि से संघ को सुरक्षित किया। वात्सल्य का अजस्व दरिया बहाया। ऐसे अनुपम शासनमाता की पावन सन्निधि में जिन क्षणों को जिया वे क्षण सार्थक हो गए। मैं परम सौभागय मानती हूँ महाशक्ति की पावन शक्ति मुझे लगभग ५० वर्ष मिली। उस शक्ति को किन शब्दों में प्रस्तुति दूँ यह शब्दों से परे है। प्रथम वार्षिकी पुण्य तिथि पर भीगे दिल की अंतरश्रद्धा समर्पित।

संघ समंदर की ये लहरें कैसे क्या उपहार चढ़ाएँ,
अंबार लगा है उपकारों का किन शब्दों में आज बताएँ,
अध्यात्म जत की अखंड ज्योति से ज्योतिर्मय है शासनमाते,
वात्सल्य भरा अनुशासन तेरा प्रतिपल आँखों में भर आए।।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संस्मरण बना जो अमूल्य धरोहर---

● **साध्वी सिद्धांतप्रभा** ●

जिनके स्मरण मात्र से मस्तिष्क श्रद्धा से नम हो जाता है। जिनकी स्मृति चित्त को प्रसन्नता प्रदान करती है, जिनकी नेहिल दृष्टि ने कितनों के जीवन को निखारा जिनके कुशल नेतृत्व में साध्वी समाज नित नई ऊँचाइयों को छूता रहा, जिनकी मनमोहक मुद्रा सबके दिलों को आकर्षित करती थी। जिनका ममतामयी साया हर व्यक्ति की थकान को दूर कर देता था। ऐसा था शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का करिश्माई व्यक्तित्व।

शासनमाता की नेहिल नजरों का आस्वाद बाल-वृद्ध, विबुद्य-अबुद्ध सभी करते थे। मैंने भी अपने जीवन में कई बार निकट सन्निधि को सुनहरे पन्नों का आनंद जिया था। ई० सन् २०१८ का प्रसंग है। मर्यादा महोत्सव के दौरान हम समणियाँ गुरु सेवा में पहुँची। शासनमाता का मनोनयन दिवस मर्यादा महोत्सव से कुछ दिन पूर्व ही आता था। हम साध्वीप्रमुखा के दर्शनार्थ पहुँची।

शुभकामनाओं सहित वंदना कर लौटने लगी। साध्वीप्रमुखाश्री जी के हाथ का ईशारा मेरी तरफ देख, मैं रुक गई। मैंने सोचा–मैं तो छोटी समणी हूँ। मुझे क्या कहेंगे? मेरे से क्या बात करेंगे। एक साधक के लिए बड़ों का ईशारा भी आदेश बन जाता है। मैं सहमती हुई साध्वीप्रमुखा के पास गई। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने पूछा–लाडनूं में क्या किया? किस विषय का अध्ययन किया, स्वाध्याय कितना करती हो? सभी प्रश्नों को मैंने उत्तरित किया। आपश्री ने मुझे कुछ प्रेरणा पाथेय दिया। मैं उन पलों को याद करती हूँ तो मेरा सिर श्रद्धा से प्रणत हो जाता है। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे उनके साध्वीप्रमुखा काल में दीक्षित होने (वाले अंतिम group की साध्वियों में एक) का अवसर प्राप्त हुआ। साध्वी दीक्षा लेने के बाद लगभग १५-२० दिन का निकट सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ जो मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर बन गया।

अरे धार्मिको किस----

● **साध्वी सुनंदाश्री** ●

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासन मात्रे नमः' मंत्र जो पाया है।
सुमिरण करते करते हमने पूरा साल बिताया है।।

बड़े जतन से साध्वी समुदय की तुमने संभाल करी।
बनी प्रेरणा स्रोत हमारी जड़ें जमाई हरी भरी।
हवा दवा जल आतप पाकर हर पादप विकसाया है।।

असाधारण साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी गौरवशाली।
शासन माता विरुद प्रदाता महाश्रमण महिमाशाली।
सर्वोत्कृष्ट कृपा उत्कृष्ट समर्पण की यह माया है।।

बरगद-सी शीतल छाया में हम सबने आराम किया।
मस्त व्यस्त दिनचर्या को क्यों तुमने पूर्ण विराम दिया।
रह रह स्मृतियाँ उभर रही नयनों ने नीर बहाया है।।

इह-पर उभर लोक में अमर बनी यह पुण्य निशानी है।
ज्योतिर्मय आभा आत्मा की क्या किससे अनजानी है।
दिव्य भव्य नव छवि दिखलाओ गीत हृदय से गाया है।।

अर्हम्

● **शासन गौरव साध्वी कल्पलता** ●

तुम हो ऊर्ध्वलोक निवासी, हम वसुधा के वासी हैं।
संस्मरणों की बांध गठरिया, मनवा फिरत उदासी है।।

क्या है रीति-रिवाज वहां के, आखिर परम्पराएं क्या।
नीति-नियम कुछ तो बतलाओ, हम ही हुए पराए क्या।
मिलना हो जाए तो करनी, बातें अच्छी-खासी है।।

नाम धाम क्या पता-ठिकाना, भावों को प्रेषित करना।
तव बिछोह की दीर्घावधि को, पलक झपकते ही भरना।
इस कारज में तुम सक्षम हो, हम तो सतत प्रयासी हैं।।

जंग जगत से जीत गई तुम, घट हम सबके रीत गए।
सूना सा संसार हो गया, पल दिन महीने बीत गए।
पौष्टिक पोषण मिलने पर भी, नयन रहे उपवासी हैं।।

यंत्र तंत्र की सुविधा अनगिन, इस विज्ञान जगत ने दी।
विफल शक्तियां मर्त्यलोक से, दिव्य लोक में जाने की।
खोलें भले प्रयोगशालाएं, किन्तु कुसुम आकाशी है।।

अर्हम्

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

शासनमाता की जय बोलो,
संतों बोलो सतियाँ बोलो,
भाई बोलो बहनों बोलो।

गुरुचरणों सर्व निछावर है,
पद्चिह्नों की यायावर है,
उस गुरुनिष्ठा की जय---

गुरु आणा ही लक्ष्मण रेखा,
चाहे देखो जीवन लेखा,
आज्ञा निष्ठा की जय बोलो।

साध्वी गण सेवा पल-प्रतिपल,
श्रम की सरिता बहती कल-कल,
शासन निष्ठा की जय बोलो।

जीवन में मस्त फकीरी थी,
निर्मल आचार अमीरी थी,
संयम निष्ठा की जय बोलो।

तुलसी युग की हो कनकप्रभा,
श्री महाप्रज्ञ युग ज्योति शिखा,
जय महाश्रमण युवा शीर्ष विभा,
गुरु कृपा पात्र की जय बोलो।

तुम हो कितनों की उपकारी,
है तीर्थ चतुष्टय आभारी,
उस महाशक्ति की जय बोलो।

लय : जय बोलो संघ सितारे की---

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

✦ *अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

चैतन्य और आनंद का स्वाभाविक संबंध है। जहाँ चैतन्य है, वहाँ आनंद है और जहाँ आनंद है, वहाँ चैतन्य है। इन दोनों में से एक को पृथक् नहीं किया जा सकता। हर मनुष्य के भीतर जैसे चैतन्य का अजस्र प्रवाह है वैसे ही आनंद का भी अजस्र प्रवाह है किंतु मन की चंचलता के कारण उसकी अनुभूति निरंतर नहीं होती।

कोई आदमी कुछ कहता है, उस समय यदि हमारा मन चंचल होता है तो हम उसकी बात को सुन ही नहीं पाते और यदि सुन पाते हैं तो उसे पूरी तरह पकड़ नहीं पाते। ठीक इसी प्रकार मन की चंचलता के कारण अपने भीतर बहने वाले आनंद के प्रवाह का हम स्पर्श नहीं कर पाते। जिस भूमिका में मन थोड़ा स्थिर होता है, उस समय आनंद की हल्की-सी अनुभूति हो जाती है। जैसे-जैसे मन की स्थिरता की मात्रा बढ़ती है, वैसे-वैसे आनंदानुभूति की मात्रा बढ़ती जाती है। मन का निरोध होने पर सहज आनंद का साक्षात्कार हो जाता है।

मन की दूरी और तीसरी कक्षा में विकल्पों (कल्पनाओं) का सिलसिला चालू रहता है। अतः मन दूसरी-दूसरी चीजों में अटका रहता है। फलस्वरूप उस समय हम सहज चेतना के स्तर पर नहीं होते। उस समय जो आनंद का अनुभव होता है, वह मन की स्थिरता के कारण अंतःस्रावी नलिकाओं में होने वाले अंतःस्राव से होता है।

चौथी और पाँचवीं कक्षा में विकल्पों का सिलसिला नहीं रहता। हमारा मन एक ही विकल्प पर स्थिर हो जाता है। हमारे मस्तिष्क की सुखानुभूति की ग्रंथि तथा अंतःस्रावी नलिकाओं पर उसका अधिक प्रभाव होता है। फलस्वरूप आनंद की अनुभूति अधिक होती है।

निरोध की कक्षा में सहज आनंद के साथ साक्षात् संपर्क हो जाता है। उस पर शारीरिक परिवर्तन का प्रभाव नहीं होता, इसलिए वह चिरस्थायी होता है।

पहली कक्षाओं में सहज आनंद की अनुभूति नहीं होती है, ऐसी बात नहीं है किंतु उसकी पूर्ण अनुभूति निरोध की कक्षा में होती है। इसीलिए पहली कक्षाओं में शारीरिक परिवर्तन से होने वाली आनंदानुभूति की मुख्य रूप से चर्चा की गई है। वैसे तो किसी पौद्गलिक संपर्क के बिना आनंद की अनुभूति होती है, उसमें सहज आनंद का प्रतिबिंब या प्रभाव रहता ही है।

(१६) ज्ञान-वैराग्याभ्यां तन्निरोधः।।

(१७) श्रद्धाप्रकर्षेण।।

(१८) शिथिलीकरणेन।।

(१९) संकल्पनिरोधेन।।

(२०) ध्यानेन च।।

(२१) गुरुपदेश-प्रयत्नबाहुल्याभ्यां तदुपलब्धिः।।

(१६) आत्मज्ञान और वैराग्य से मन का निरोध होता है। आत्मज्ञान चैतन्य की अंतर्मुखी प्रवृत्ति है। जब हमारे चैतन्य का प्रवाह अंतर्मुख होता है तब मन की कल्पनाएँ और स्मृतियाँ निरुद्ध हो जाती हैं। इसी प्रकार वह पदार्थों व वृत्तों के प्रति अनासक्त होता है, तब उसकी चंचलता छूट होती है।

(१७) मन के निरोध का एक हेतु श्रद्धा का प्रकर्ष है। वह ध्येय के प्रति अत्यंत निष्ठाशील व समर्पित होकर निरुद्ध हो जाता है। आत्मज्ञान, वैराग्य और श्रद्धा-प्रकर्ष—मन की स्थिरता के ये तीनों हेतु आंतरिक हैं।

(१८) काय का शिथिलीकरण भी मन के निरोध का साधन है। काय की चंचलता मन की चंचलता को बढ़ाती है। मन की स्थिरता के लिए शरीर की स्थिरता आवश्यक है।

(१९) संकल्पों का निरोध करने से भी मन निरुद्ध होता है। मन कल्पनाओं से भरा रहता है तब क्रियात्मक शक्ति का विकास नहीं होता। करणीय कल्पना का मन पर भार न हो, वह खाली रहे तभी उसकी शक्ति केंद्रित होती है।

(२०) मनोनिरोध का सबसे बड़ा साधन है—ध्यान।

शिथिलीकरण, संकल्प-निरोध और ध्यान—मन की स्थिरता के ये तीनों हेतु अभ्यासात्मक हैं।

(२१) गुरु के उपदेश—साधना के रहस्यों का प्रशिक्षण और प्रयत्न की बहुलता—बार-बार अभ्यास करने से उक्त साधनों की उपलब्धि हो जाती है।

मनोनिरोध के साधन

केशी स्वामी ने गौतम स्वामी से पूछा—यह मन एक चपल घोड़ा है। वह चलते-चलते उन्मार्ग की ओर भी चला जाता है। आप उसका निग्रह कैसे करते हैं?

गौतम ने कहा—मैंने उस घोड़े को खुला नहीं छोड़ रखा है। उसकी लगाम मेरे हाथ में है।

वह लगाम क्या है? ज्ञान, बुद्धि या विवेक लगाम है। वह जिसके हाथ में होती है, वह उस घोड़े पर नियंत्रण पा लेता है।

इस संवाद में मन को स्थिर करने का जो उपाय बताया गया है, वह ज्ञानयोग है। यह मन के अनुशासन का प्रथम हेतु है। यह हर मनुष्य के लिए कठिन है। दूसरी बात यह है कि सबकी रुचि भी समान नहीं है। कोई आदमी ज्ञान-प्रधान होता है तो कोई श्रद्धा-प्रधान होता है और कोई क्रिया-प्रधान होता है।

यहाँ ज्ञान का अर्थ सब कुछ जानना नहीं है। किंतु अपने अस्तित्व की तीव्र अनुभूति है। वैराग्य उसका परिणाम है। अपने अस्तित्व के प्रति अनुराग होने का नाम ही विराग है। जब तक अपने अस्तित्व का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता, तब तक बाह्य वस्तुओं के प्रति मन में तृष्णा रहती है। उसके द्वारा उनके प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। आत्मानुभूति होने पर यह स्थिति उलट जाती है। अनुराग वस्तुओं से हटकर अपने प्रति हो जाता है। इसका अर्थ है कि उनके प्रति विराग हो जाता है।

संकल्प, विकल्प और इच्छा—ये सब मन के कार्य हैं। बाह्य वस्तुओं के प्रति जितनी कल्पना और इच्छा होती है, मन उतना ही चंचल रहता है। मन की गति को आत्मा की ओर मोड़ देने पर उसकी कल्पना और इच्छा-शक्ति क्षीण हो जाती है। इसी को हम कहते हैं वैराग्य के द्वारा मन का विरोध।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१३०)

युगद्रष्टा युगस्रष्टा तुलसी तुमको पा युग धन्य हो गया।
अमल तुम्हारे अवदानों से तेरापंथ अनन्य हो गया।।

देख नतीजा विश्वयुद्ध का देव! तुम्हारा अंतस दहला
दिया विशद संदेश शांति का व्यापकता का पग यह पहला
असली आजादी अपनाओ यह निर्देश तुम्हारा दूजा
हो चरित्र ऊँचा मानव का आत्म-शिवालय की है पूजा
दृश्य देखकर अधिवेशन का जन-जन मन चैतन्य हो गया।।

भारत के हर गाँव नगर में देहातों में अलख जगाई
पाँव-पाँव चलकर जन-जन तक संयम-सुर-सरिता पहुँचाई
मिशन बनाया तुमने जिसको धर्मसंघ का मिशन बना वह
संप्रदाय से मुक्त धर्म हो सफल हुआ प्रभु का सपना यह
प्यास बुझाने मानवता की अणुव्रत नव पर्जन्य हो गया।।

जीते सपनों की दुनिया में पर यथार्थ सम्मुख रहता था
अनुशासन में वत्सलता का इमरतमय निर्झर बहता था
देखी सुरगिरि-सी ऊँचाई और समंदर-सी गहराई
मूर्तिमान पौरुष नस-नस में जाग गई अनहद पुण्याई
था प्रायोगिक जीवन सारा प्रखर सहज श्रामण्य हो गया।।

क्या भक्तों की बात बताएँ दुश्मन भी अनुकूल हो गए
काँटे बिछे कभी जो मग में वे गुलाब के फूल हो गए
जिन-वाङ्मय का संपादन कर जिन-शासन की शान बढ़ाई
किया नया निर्माण संघ का विष पी सबको सुधा पिलाई
परस तुम्हारे चरणों का पा बीहड़ अभयारण्य हो गया।।

(१३१)

तिमिर तट पर ज्योति की फसलें उगाएँ।
मंत्र दो मासूम मन भी मुस्कुराए।।

देखते आए अभी तक अपर को हम
आत्मदर्शन की सहज ही वृत्ति है कम
क्यों कभी छाए कुहासा सोच पर भी
पुष्ट हो संकल्प रहना हर समय सम
आँख दो ऐसी कि खुद को देख पाएँ।।

जिंदगी के मर्म की पोथी पढ़ेंगे
धैर्य से इतिहास अलबेला गढ़ेंगे
नहीं छाया धूप की प्रतिबद्धता है
घाटियों के उच्च शिखरों पर चढ़ेंगे
पंख दो नभ के सितारे तोड़ लाएँ।।

धार ही जीवन नहीं माँगा किनारा
शक्ति ही साधन नहीं माँगा सहारा
रोशनी की तूलिका कर में थमा दो
सिरज लूँगी मैं स्वयं कोई नजारा
आँक लो कितनी खुली चिंतन-दिशाएँ।।

बसी आँखों में झलक वह हृदयहारी
कान में अनुगूँज शब्दों में उतारी
प्यास प्राणों की अबूझी कह रही है
रहे अधरों पर सदा अभिधा तुम्हारी
झाँक लो भीतर हृदय कैसे दिखाएँ।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३३) बोधिमासाद्य जायन्ते, भवभ्रमणपराङ्मुखाः।
अबोधिः परमं कष्टं, बोधिः सुखमनुत्तरम्।।

मनुष्य बोधि को प्राप्त कर संसार-भ्रमण से पराङ्मुख हो जाते हैं। अबोधि परम कष्ट है और बोधि अनुत्तर सुख।

अबोधि दुःख है और बोधि सुख है। अबोधि का अर्थ—अज्ञान है और मिथ्याज्ञान भी है। अज्ञान से भी अधिक खतरनाक है मिथ्याज्ञान। अज्ञान का अर्थ ज्ञान का अभाव नहीं है, अपितु अल्प ज्ञान है। मिथ्याज्ञान विपरीत ज्ञान है। संसार भ्रमण का मूल हेतु यही है। अबोधि संसार से विमुख नहीं करती। वह मानव को संसार की दिशा में ही लिए चलती है।

संसार की विमुखता के लिए बोधि अपेक्षित है। उसकी प्राप्ति उन्हीं से हो सकती है जो स्वयं बोधि को प्राप्त है, जिन्हें बोधि ा का स्पर्श हुआ है। सद्गुरु की उपासना, सत्संग का प्रयोजन का हेतु इसीलिए है। सद्गुरु की सन्निधि से अनेक लोगों ने जीवन-नैय्या पार की है। सत्संग को भव-सागर से पार करने के लिए नौका की उपमा ही है। 'सत्संङ्गत् संजायते ज्ञानं' सत्संग से वह ज्ञान प्राप्त होता है जिसे पाकर व्यक्ति संसार से उदासीन बन जाता है, संसार के स्वरूप का उसे दिग्दर्शन हो जाता है। अबोधि ऐसा नहीं कर सकती। इसलिए अबोधि को दुःख कहा है। बोधि सहज ही व्यक्ति को शनैः-शनैः आत्मस्थ बना देती है, उसके अज्ञानतम का उच्छेद कर देती है और उसे पूर्ण सुखी-आनंदित बना देती है। बोधि प्राप्ति का एक उपाय है सत्संग, उसके अन्य नियम भी हैं। यह आवश्यक नहीं है कि सबको सत्संग का योग मिले ही। कुछ-कुछ व्यक्ति स्वतः ही अपनी साधना के द्वारा सहज ही उसे प्राप्त कर लेते हैं, कुछ अन्य निमित्तों को पाकर बुद्धत्व को प्राप्त हो जाते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न ३० : तपस्वियों का सम्मान क्या उनकी उज्ज्वलता को मंद नहीं करता?

उत्तर : तपस्वियों का अभिनंदन तप का अभिनंदन है। इससे लोगों में तप का प्रभाव बढ़ता है। साथ ही अभिनंदन तपस्वियों के लिए एक खतरा भी है। तपस्या के साथ लेन-देन करना एक प्रकार से उसे बेचना है। फल की आकांक्षा से की जाने वाली तपस्या वास्तविक तपस्या नहीं है।

भाव धर्म

प्रश्न १ : भाव किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों के संयोग या वियोग से होने वाली आत्मा की अवस्था को भाव कहते हैं।

प्रश्न २ : क्या परिणाम विशेष को भाव कहते हैं?

उत्तर : परिणाम विशेष को भी भाव कहते हैं। यह मनोयोग से संबंधित परिणाम है। अध्यवसाय, लेश्या व योग के समन्वित रूप को ही भाव कहते हैं। व्यवहार में मोक्ष के चार मार्गों में भाव का भी उल्लेख है। वह यही परिणाम विशेष भाव है।

प्रश्न ३ : क्या भाव शुभ, अशुभ दोनों हैं?

उत्तर : भाव शुभ-अशुभ दोनों होते हैं। शुभ भावों में संलग्न जीव मोक्ष का उत्कृष्ट सुख पा सकता है, अशुभ भावों में लगा जीवन सातवीं नरक तक का उत्कृष्ट दुःख भी पा लेता है। जैन व्याख्या ग्रंथों में प्रसन्नचंद राजर्षि का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन में ऐसा प्रसंग बना कि अंतर्मुहूर्त समय में जब अशुभ भाव व अध्यवसाय की तीव्रता बढ़ी, तो उन्होंने सातवीं नरक तक के योग्य कर्म पुद्गलों के दलित बाँध लिए। जब अशुभ से शुभ की ओर तीव्रता से प्रयाण किया तो सातवीं नरक तक के उन कर्म दलिकों को तोड़ते हुए उसी अंतर्मुहूर्त समय में सर्वज्ञ बन गए। सचमुच भावों का खेल अजीब है।

प्रश्न ४ : भाव शून्य क्रिया कहाँ होती है?

उत्तर : अमनस्क जीवों की क्रिया भाव शून्य होती है। उन जीवों में अध्यवसाय तो होता है, किंतु मनोयोग न होने से जो क्रिया होती है, उसमें भावों का अभाव रहता है। ऐसी क्रिया में लाभ-हानि दोनों न्यूनतम होती है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य तुलसी

श्वेतांबर से दिगंबर-शाखा निकली, यह भी नहीं कहा जा सकता। दिगंबर से श्वेतांबर-शाखा का उद्भव हुआ, यह भी नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक संप्रदाय अपने को मूल और दूसरे को अपनी शाखा बताता है। पर सच तो यह है कि साधना की दो शाखाएँ समन्वय और सहिष्णुता के विराट् प्रकांड का आश्रय लिए हुई थीं, वे उसका निर्वाह नहीं कर सकीं, काल-परिपाक से पृथक् हो गईं। अथवा यों कहा जा सकता है कि एक दिन साधना के दो बीजों ने समन्वय के महातरु को अंकुरित किया और एक दिन वही महातरु दो भागों में विभक्त हो गया। किंवदंती के अनुसार वीर-निर्वाण ६०६ वर्ष पश्चात् दिगंबर-संप्रदाय का जन्म हुआ, यह श्वेतांबर मानते हैं और दिगंबर-मान्यता के अनुसार वीर-निर्वाण ६०६ में श्वेतांबर-संप्रदाय का प्रारंभ हुआ।

सचेलत्व और अचेलत्व का आग्रह और समन्वयदृष्टि

जब तक जैन शासन पर प्रभावशाली व्यक्तित्व का अनुशासन रहा, तब तक सचेलत्व और अचेलत्व का विवाद उग्र नहीं बना। कुंदकुंद के समय यह विवाद तीव्र हो उठा था। बीच-बीच में इसके समन्वय के प्रयत्न भी होते रहे हैं। यापनीयसंघ श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराओं का समन्वित रूप था। इस संघ के मुनि अचेलत्व आदि की दृष्टि से दिगंबर-परंपरा का अनुसरण करते थे और मान्यता की दृष्टि से श्वेतांबर थे। वे स्त्री-मुक्ति को मानते थे और श्वेतांबर-सम्मत आगम-साहित्य का अध्ययन करते थे।

समन्वय की दृष्टि और भी समय-समय पर प्रस्फुटित होती रही है। कहा गया है—'कोई मुनि दो वस्त्र रखता है, कोई तीन, कोई एक और कोई अचेल रहता है। वे परंपरा एक-दूसरे की अवज्ञा न करें; क्योंकि यह सब जिनाज्ञा-सम्मत है। यह आचार-भेद शारीरिक शक्ति और धृति के उत्कर्ष और अपकर्ष के आधार पर होता है। इसलिए सचेल मुनि अचेल मुनियों की अवज्ञा न करें और अचेल मुनि सचेल मुनियों को अपने से हीन न मानें। जो मुनि महाव्रत धर्म का पालन करते हैं और उद्यत-विहारी हैं, वे सब जिनाज्ञा में हैं।'

चैत्यवास परंपरा

वीर-निर्वाण की नवीं शताब्दी (८५०) में चैत्यवास की स्थापना हुई। कुछ शिथिलाचारी मुनि उग्र-विहार छोड़कर मंदिरों के परिपार्श्व में रहने लगे। वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी तक इनका प्रभुत्व नहीं बढ़ा। देवर्द्धिगणी के दिवंगत होते ही इनका संप्रदाय शक्तिशाली हो गया। विद्याबल और राज्यबल, दोनों के द्वारा इन्होंने उग्र-विहारी श्रमणों (संविग्नपाक्षिकों) पर पर्याप्त प्रहार किया। हरिभद्रसूरि ने 'संबोध-प्रकरण' में इनके आचार-विचार का सजीव वर्णन किया है।

अभयदेवसूरि देवर्द्धिगणी के पश्चात् जैन शासन की वास्तविक परंपरा का लोप मानते हैं।

चैत्यवास से पूर्व गण, कुल और शाखाओं का प्राचुर्य होते हुए भी उनमें पारस्परिक विग्रह या अपने गण का अहंकार नहीं था। वे प्रायः अविरोधी थे। अनेक गण होना व्यवस्था-सम्मत था। गणों के नाम विभिन्न कारणों से परिवर्तित होते रहेत थे। भगवान् महावीर के उत्तराधिकारी सुधर्मा के नाम से गण को सौधर्म गण कहा गया। समन्तभद्रसूरि ने वनवास स्वीकार किया, इसलिए उसे वनवासी गण कहा गया है।

चैत्यवासी शाखा के उद्भव के साथ एक पक्ष संविग्न, विधिमार्ग या सुविहितमार्ग कहलाया और दूसरा पक्ष चैत्यवासी।

स्थानकवासी

इस संप्रदाय का उद्भव मूर्ति-पूजा के अस्वीकार पक्ष में हुआ। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी में लोंकाशाह में मूर्ति-पूजा का विरोध किया और आचार की कठोरता का पक्ष प्रबल किया। ये गृहस्थावस्था में ही थे। इनकी परंपरा में ऋषि लवजी, आचार्य धमसिंहजी और आचार्य धर्मदासजी प्रतिभाशाली आचार्य हुए। आचार्य धर्मदासजी के निन्यानबे शिष्य थे। उन्होंने अपने बाईस विद्वान् शिष्यों को आचार्य बनाया और विभिन्न प्रांतों में उन्हें धर्म-प्रचार करने के लिए भेजा। उसके बाद लोंकाशाह का संप्रदाय 'बाईस टोला' या बाईस-संप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आगे चलकर स्थानकों की मुख्यता के कारण यही 'स्थानकवासी' संप्रदाय के नाम से पहचाना जाने लगा।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

✦ *चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बोते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर काव्यात्मक उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी काम्यप्रभा** ●

गाथा गौरव री गूंजेला सदियाँ तक अवनी अम्बर में।
ममता री बा मोहक मूरत नित घूमै भीतर बाहर में।।

श्री तुलसी महाप्रा प्रभु महाश्रमण री पाई रिझवारी,
सर्वस्व समर्पण गुरु चरणां शासन सेवा में इकतारी,
विश्राम नहीं अविराम सदा उठती लहरां श्रम सागर में।

चेहरो चुम्बक सो आकर्षक वत्सलता झरती नयणां में,
इक आँख दिखाता गलती पर माधुर्य टपकतो वयणां में,
जीवन री ज्योत जगावण म्हारै बैठ्या हो मन मंदर में।

चुटकी में चिंता हर लेता, जो थारै चरणां में आता,
पूनम सो उजियारो करता, आशापूरण शासनमाता,
बै वचनसिद्धि री घटनावां, बोलै है जन-जन रै स्वर में।

महाश्रमणीजी म्हां छोटा सतियाँ पर करुणा दृग बरसाता,
संयम री चादर ने उजली रखणै री शिक्षा फरमाता,
बै शिक्षा रा अनमोल वचन अंकित है दिल री गागर में।।

लय : तुलसी-तुलसी-तुलसी-तुलसी----

मन-मंदिर की मूरत

● **साध्वी श्रुतिप्रभा** ●

जागी जन्मों की पुण्याई,
संयम पथ पर कदम बढ़ाया,
गुरु की अनहद कृपा दृष्टि से
शासन माँ का साया पाया।।

हर पल देखा नयनयुगल से,
वत्सलता का बहता झरना,
छोटी बातों से बतलाती,
ज्ञान-पिटक को कैसे भरना।।

लाड़-प्यार से हमें सिखाती,
अनुशासन को कैसे सहना,
निष्ठापंचक अपनाकर के
श्रेष्ठ साध्वी सबको बनना।।

मंगलपाठ प्राणवान था,
जन-जन की पीड़ा को हरता,
अंतर्मानस को झंकृत कर
ऊर्जा को संचारित करता।।

पास नहीं पर दूर भले हो,
रखना मेरा ध्यान निरंतर,
मन-मंदिर की मूरत तुम हो,
समरू मैं तुमको विशिवास।।

अर्हम्

● **साध्वी जिनप्रभा** ●

जय हे जय शासनमाता।
समता, ममता, क्षमता की मूरत चार तीर्थ की त्राता।।

गुरुवर तुलसी हाथों से दीक्षित शिक्षित और परीक्षित,
गुरुवर की दैविक नजरों में चट साध्वीप्रमुखा चयनित,
तुलसी युग की अरुणिम आभा गाएँ गौरव गाथा।।

गुरुदृष्टि सदा सुससृष्टि समझ हरपल उसको आराधा,
गुरुआज्ञा मंत्र अनूठा सद्यावेद्य मानकर साधा,
विनय, समर्पण, सेवा, संयम की संस्कार प्रदाता।।

अनुशासनप्रियता, कार्यकुशलता, चिंतन की गहराई,
बौद्धिकता, चारित्रिक, निर्मलता, अनासक्ति वरदायी,
अप्रमत्त जीवनशैली चेहरा हर पल मुस्काता।।

लेखक शिक्षक संपदा चिंतक प्रवचनकार प्रवक्ता,
काव्य कला निष्णात लेखनी में देखी गतिमयता,
मानो लक्ष्मी सरस्वती से जोड़ा गहरा नाता।।

साध्वी समाज महिला समाज युग-युग होगा आभारी,
श्रम की बूँदों से सींच सींच विकसित की है फुलवारी,
जो आता उलझन लेकर वह समाधान पा जाता।।

कितनों को हस्तालंबन देकर तुमने पथ दिखलाया,
कितनों की अंधियारी रातों में तुमने दीप जलाया,
वत्सलता का दरिया अविरल नयनों में लहराता।।

सदियों तक गूंज रहेगी कनकप्रभा व्यक्तित्व निराला,
स्वर्ण काल वह अर्धसदी का बाँटेगा उजियाला,
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रे नमः जाप सुखदाता।।

मार्च महीने की छः तारीख बनी आज इतिहासी,
तृप्त किया उन आँखों को जो गुरुदर्शन की प्यासी,
उग्रविहारी प्रभुवर की जन-जन बलिहारी जाता।
ज्योतिचरण जय महाश्रमण की चिहुं दिशि में यशगाथा।।

आजीवन गुरुकुलवास और गुरुदिलवासी बन रहना,
एक तान से एक ध्यान से गुरु इंगित में बहना,
ऐसा दुर्लभ अवसर कोई भाग्यवान ही पाता।
वात्सल्यपीठ वातायन वत्सलता का पाठ पढ़ाता।।

लय : जय हे-जय जीवनदाता---

अर्हम्

● **साध्वी पुष्यप्रभा** ●

तुलसी युग की अरुणिमा आभा संघ हुआ गुलजार।
सदियाँ याद करेगी श्रद्धा से नमन करेगी।।

मन मंदिर में शोभित गुरु का ही आसन,
दर्शन गुरु का लगता मधुरिम सावन,
गुरु ही मेरा संजीवन है गुरु जीवन आधार।

प्रबल शौर्य पौरुष का सफर था सुनहरा,
प्रखर लेखनी का चलता अविरल पहरा,
सदा यशस्वी वर वर्चस्वी सृजन किया अनपार।

नारी जगत को तमने पल-पल संवारा,
उलझन की हर गुत्थी से उसको उबारा,
किन शब्दों में व्यक्त करें हम अनगिन है उपकार,
धन्य हो गए चारों तीरथ पा तेरी जयकार।

उपलब्धियों की अनुपम दास्तां सुहानी,
जन-जन के सुख पर तेरी अभिनव कहानी,
शासनमाता के गीतों से गूंज उठा संसार।

लय : स्वर्ग से सुंदर---

अर्हम

● **साध्वी चित्रलेखा** ●

किन पावन परमाणु पुंज से निर्मित था व्यक्तित्व तुम्हारा।
जिसने पाई सुखद सन्निधि उसने अपना भाग्य संवारा।।

कर्मठ हाथों ने गणवन में संस्कारों के सुमन खिलाए,
आगमसोची सूझबूझ से मुश्किल पथ आसान बनाए,
टूटी-बिखरी आस्थाओं को दे आलंबन सदा उबारा।

लक्ष्यभ्रमित मानव को तुमने मंजिल का अहसास कराया,
दर्दिल आम-खास सब जन को स्नेहदान देकर सहलाया,
साँस-साँस में संघभक्ति का बजता रहता था इकतारा।

बौद्धिकता अरु विनयशीलता रहीं सदा बनकर सहचरी,
सहज सरलता निष्पृहता से गुरु-दिल स्थान बनाया भारी,
अर्हताएँ देख अलौकिक गुरुओं ने तुमको सत्कारा।

ककहरा जीवन-विकास का सीखा मैंने पास तुम्हारे,
प्यासी अंखियाँ दर्शन पाने ढूँढ़ रही हैं गगन सितारे,
स्मृतियों की रील निरंतर चलती नजर न आए कहीं किनारा।

उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' की तृतीय एवं चतुर्थ कार्यशाला का आयोजन पट्टालम् जैन विद्यालय में छठी क्लास के १२० बच्चों के साथ किया गया। कार्यशाला का तृतीय विषय 'सत्य' एवं चतुर्थ विषय 'माता-पिता के आज्ञा का पालन' था। समसामयिक विषय के अंतर्गत 'गुड टच बैड टच' एवं 'पुस्तकों और शिक्षा का महत्त्व' विषय पर भी कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत महिला मंडल द्वारा हुआ। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। महाप्राण ध्वनि पादहस्तासन एवं संकल्प का प्रयोग करवाया गया। संयोजिका सुभद्रा लुणावत एवं गुणवंती खांटेड़, कन्या मंडल से अक्षी बोहरा ने इंग्लिश एवं तमिल भाषा में सभी विषय को कहानी, घटना एवं स्किट के रूप में प्रस्तुत किया। बच्चों ने भी स्किट की प्रस्तुति दी। कार्यशाला में लीना सेठिया, सूरज बोथरा, संगीता आच्छा, मनाली गोलेच्छा की सहभागिता रही। मंत्री रीमा सिंघवी ने आभार ज्ञापन किया।

निर्माण प्रोजेक्ट के प्रायोजक दिलीप कुमार, नितेश कुमार गोलेच्छा की तरफ से बच्चों को पुरस्कार प्रदान करवाया गया।

होली पर्व पर विशेष

मानवीय एकता का संदेशवाहक पर्व है - होली

❐ मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ❐

भारत एक ऐसा लोकतांत्रिक देश है, जिसमें विविध संस्कृति के लोगों का समावेश है। इस देश में विविध प्रकार की भाषाएँ, विविध प्रकार के धार्मिक संगठन, विविध प्रकार के खान-पान, विविध प्रकार के सामाजिक व धार्मिक समारोह तथा विविध प्रकार के पर्व-त्यौहार वर्ष भर आते ही रहते हैं जो कि अपनी-अपनी परम्परा रीति-रिवाज के अनुसार मनाए जाते हैं। किन्तु कुछ ऐसे राष्ट्रीय व सामाजिक पर्व हैं जो सम्पूर्ण भारतीय लोग एकरूपता के साथ मनाते हैं। उन पर्वों में होली, दीपावली, रक्षाबंधन का पर्व अनेकता में एकता का संदेश देते हैं।

होली का पर्व रंगों का पर्व है। यह पर्व रंगों की तरह परस्पर मेलजोल, भाईचारा, मैत्री, मानवीय एकता का पर्व है। मानवीय संदेवनाओं को उजागर करने वाला यह पर्व जनमानस में प्रेम, स्नेह, सौहार्द, सद्भावना का बीज वपन करता है। बसंत ऋतु के आगमन का संदेशवाहक यह पर्व ऋतु परिवर्तन के साथ मानव मन, मस्तिष्क को परिष्कृत कर वातावरण में सुवास और मिठास घोल देता है। रंगों को उमंग के साथ खेलकर मानव तरंगित हो जाता है। रंगों का मानव मन व मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव होता है। रंग जो मानव को शांति, शीतलता व सुकुन प्रदान करने वाले होते हैं तो वे मानव में ऊष्मा पैदा कर उत्तेजित करने वाले भी होते हैं। जीवन धारा को आमूलचूल परिवर्तन करने में रंगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। यद्यपि प्रत्येक रंग का प्रभाव अलग-अलग होता है। रंगों का प्रयोग न केवल मानव जाति बल्कि पशु जगत पर प्रभाव डालता है। शांति स्थापित करना व क्रांति घटित करना रंगों से संभव है।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी कलर थैरेपी का विकास हुआ है। जो स्वास्थ्य लाभ में कारगर सिद्ध हुए है। उग्रता, उत्तेजना, शांति और शीतलता—ये सब रंगों के प्रयोग से संभव है। अध्यात्म के क्षेत्र में जैन परम्परा में लेश्या के प्रयोग तथा विश्व विश्रुत अनादि निधन महामंत्र नवकार रंगों पर आधारित है जिसका जप व ध्यान का प्रयोग मानव को रंग और केन्द्र पर प्रयोग करवाए जाते हैं तो उसके बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए है। नवकार महामंत्र के पांच पद, पाँच रंग व पाँच केन्द्रों पर प्रयोग करवाए जाते हैं तो मानव वृत्ति में परिवर्तन हो जाता है। उसके क्रोध-लोभ की वृत्ति शांत होने लगती है। विद्यार्थी में मानसिक एकाग्रता, स्मरणशक्ति, ग्रहणशक्ति वृद्धिगत होने लगती है। इस प्रकार अच्छे ढंग से किए गए प्रयोग से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। तो कहा जा सकता है कि होली का पर्व रंगों का पर्व है जिसमें सामाजिक समरसता, पारस्परिक प्रेम उत्पन्न होना चाहिए किन्तु पर्वों के साथ जब विकृतियाँ जुड़ जाती हैं तो कटुता का जहर भी घुल जाता है। वर्तमान में पर्वों के प्रति लोगों के मानस में जो उमंग, उत्साह, हर्ष और उल्लास होना चाहिए वो शनैः-शनैः क्षीण होता जा रहा है। कारण स्पष्ट है पर्व में जुड़ने वाली अनेक प्रकार की विकृतियाँ। आवश्यकता है व्यक्ति प्रकृति और संस्कृति के साथ पर्व से जुड़ने का प्रयास करे तथा उल्लास भावना के साथ पर्व मानए तो संभव है जीवन में मिठास का अहसास तथा विश्वास को बढ़ने का अवसर मिल सकेगा। पर्व के हार्द को समझे और उस तरफ बढ़ने का प्रयास करते रहें।

अंग्रेजी शब्द होली अर्थात् पवित्रता। पर्व पवित्रता का संदेश देते हैं। हमारा तन-तन-चिंतन भावना कार्यशैली सबसे पवित्र हो सबके साथ पवित्र हो ताकि आत्मा भी पवित्र, शुद्ध, बुद्ध और मुक्ति की दिशा में अग्रसर हो सके और हम यथार्थ, पुरुषार्थ के साथ परमार्थ की भावना को विकसित कर सकेंगे। यही काम्य है।

टीपीएफ कैलेंडर-२०२३ का अनावरण एवं सम्मान समारोह

चेन्नई।

टीपीएफ, चेन्नई चेप्टर द्वारा २०२३ कैलेंडर आर्ट पेपर के माध्यम से बनाया गया। इसमें प्रति माह के पन्नों पर १२ भावनाओं को दर्शाते चित्र व उनका ज्ञान और तेरापंथ के पर्वों का ज्ञान, लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व, दिन और रात के चौघड़िए, तीर्थंकरों के कल्याणक पर्व को प्रत्येक पृष्ठ में शामिल करके ज्ञानवर्धक एवं सौंदर्य से भरपूर बनाने का प्रयास किया गया है। टीपीएफ की स्थायी योजनाओं एवं उद्देश्यों के बारे में कैलेंडर-२०२३ जानकारी लिए हुए जन-जन तक उनके उद्देश्यों को पहुँचाने में समर्थ है।

टीपीएफ टीम ने कैलेंडर २०२३ के सभी प्रायोजकों का आभार व्यक्त करते हुए सम्मान किया। कैलेंडर के पूरे वर्ष भर के मुख्य प्रायोजक के रूप में मुकेश बाफना का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ। प्रतिमाह प्रायोजक के रूप में गौतम अमूल बोहरा, प्यारेलाल संजय पितलिया, नेचर हेल्थ केयर, भिक्षु केयर, कुंदन मार्केटिंग एजेंसीज, ग्रेंड मैग्नम हाउसिंग प्राइवेट लिमिटेड, एक्सपोर्ट, शुभम् लिमिटेड एंजेल स्कूल, विजय शुभम् बेनिफिट एंड निधि लिमिटेड, सुधीर फाउंडेशन प्राइवेट लिमिटेड, शुभम् विद्या मंदिर स्कूल, मेट्रो इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मेक माय चेयर, सुकनराज संतोष परमार, जीएसएम ज्वेलर्स की तरफ से आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ।

कैलेंडर को भव्य रूप में देने में डॉ० कमलेश नाहर की मुख्य भूमिका रही। अनिल लुणावत, दिनेश धोखा, प्रसन्न बोथरा, प्रवीण समदरिया, सिद्धांत बोहरा, सुधीर एवं पूरी टीम का सहयोग सराहनीय रहा।

क्रोध पर संयम होना उच्चता का लक्षण

नोखा।

व्यक्ति शांत जीवन जीना सीखे। दूसरे की समस्या से दूसरे के सुःख से स्वयं दुखी न हो। अप्रिय बात हो जाए तो सहन करे। गुस्सा न करे। क्रोध पर नियंत्रण, संयम हो तो व्यक्ति अनेक बाधाओं से बच सकता है। उच्चता का लक्षण है। स्वयं पर कंट्रोल करें। सुखी जीवन तभी हो सकता है काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, माया, छल-कपट से दूर रहे। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने तेरापंथ भवन, नोखा में व्यक्त किए।

साध्वी पुलकितयशा जी ने मनुष्य को आलोचना, गाली व कदाग्र से बचने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि घृणा से बचें, मैत्री का विकास करें, तभी मानव जीवन की सार्थकता है। कार्यकर्ता इंदरचंद बैद ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की स्मृति पुस्तक अद्वितीय कृति है साध्वीश्री को भेंट की।

महिला मंडल के विविध आयोजन

'उम्मीद बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' वर्कशॉप के तीसरे चरण का कार्यक्रम तेरापंथ महिला मंडल, बालोतरा द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, इंदिरा गांधी नगर, बालोतरा में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का प्रारंभ हुआ।

इस कार्यक्रम में लगभग १७० बच्चे उपस्थित हुए। कार्यशाला प्रारूप के अनुसार महाप्राण ध्वनि का प्रयोग नौ बार करवाया गया व महाप्राण ध्वनि के लाभ भी बताए गए और बच्चों को सदैव इसे करने की प्रेरणा दी। उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़ ने कार्यशाला के विषय के अनुरूप मीठी वाणी पर विचार व्यक्त किए।

सहमंत्री इंदु भंसाली ने शिक्षा व पुस्तकों का महत्त्व समसामयिक विषय पर विचार व्यक्त किए। पुस्तकें वास्तव में बच्चों की सबसे सच्ची दोस्त होती हैं। शिक्षा और पुस्तक एक-दूसरे के पूरक होते हैं। सहमंत्री रेखा बालड़ ने व्यक्तिगत स्वच्छता पर अपने विचार व्यक्त किए और बच्चों को सफाई के बारे में विशेष प्रशिक्षण दिया। बच्चों को अनुप्रेक्षा, मंगलभावना व संकल्प भी अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा ने अच्छी तरीके से करवाई। अध्यापक धीराराम डिगलर ने अभातेममं के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। उन्होंने तेरापंथ महिला मंडल, बालोतरा की बहनों को इस कार्यक्रम के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। सहमंत्री रेखा बालड़ की तरफ से सभी बच्चों को पुरस्कार दिए गए एवं सभी प्रश्न-उत्तर विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने किया। इस कार्यक्रम में स्कूल के प्रिंसिपल समयसिंह गुजर व अन्य अध्यापक भी उपस्थित थे।

द पावर ऑफ रेसोल्यूशन

आमेट

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कुमार जी के सान्निध्य एवं तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में द पावर ऑफ रेसोल्यूशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि हर कोई स्वयं का नया भविष्य गढ़ सकता है। संकल्प हमारी बहुत बड़ी शक्ति है और इसके द्वारा बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है। शास्त्रों में तीन प्रकार की शक्तियों का उल्लेख किया जाता है—इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति और एकाग्रता की शक्ति। ये तीन शक्तियाँ कम या ज्यादा मात्रा में हर व्यक्ति के पास होती हैं। कोई भी इन तीन शक्तियों से हीन नहीं है, लेकिन सवाल इन्हें जागृत करने का है। संकल्प शक्ति जिसने जगा ली, अजेय बन सकता है।

दृढ़ संकल्प मनुष्य को किसी भी बड़े व्यापार में सफलता दिला सकता है। उसकी मुश्किलों का सामना कर सकता है। दृढ़ संकल्प एक विद्यार्थी को उसकी पढ़ाई में और भी बेहतर करने लायक बना सकता है। दृढ़ संकल्प विद्यार्थी को उच्च पदों पर पहुँचने में मदद कर सकता है। दृढ़ संकल्प मनुष्य के सपने साकार करने में सबसे ज्यादा मदद करता है।

आपका संघर्ष का समय अपनी जड़ें मजबूत करने का समय है। आप इस समय को व्यर्थ नहीं समझें एवं निराश ना हों। जैसे ही आपकी जड़ें मजबूत, परिपक्व हो जाएँगी, आपकी सारी समस्याओं का निदान हो जाएगा। आप खूब फलेंगे-फूलेंगे, सफल होंगे और आकाश की ऊँचाइयों को छूएँगे। जीवन के किसी भी क्षेत्र और अवस्था में यदि असफलता हाथ लगती है तो उसका कारण केवल मेहनत की कमी नहीं होता। मेहनत को प्रेरित करने वाला तत्त्व संकल्प शक्ति है। इतिहास साक्षी है कि कठिनाइयों का सामना अपने अदम्य साहस और अटूट विश्वास के बल पर किया जा सकता है।

मुनि रविंद्र कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाया। मंगलाचरण संगीता पामेचा, मनीषा छाजेड़, कोमल भंडारी ने संकल्प गीत से किया। महिला मंडल मंत्री संगीता पामेचा ने आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में काफी अच्छी संख्या में लोग उपस्थित थे।

शिल्पशाला 'द पावर ऑफ साइलेंस का आयोजन

कोयंबटूर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में स्थानीय तेममं ने शिल्पशाला 'द पावर ऑफ साइलेंस' पर कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें शुरुआत बबीता गुणेचा ने मंगलाचरण से की। रुचिका बैद द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अध्यक्षा मंजु देवी गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। वंदना पारेख ने कहा कि मन का शांत होना, सहज होना मन का ठहराव और स्थिरता ही मौन है। मौन तब करना चाहिए जब आपको कोई सच्चाई का पता ना हो, जहाँ रिश्ता बचाना जरूरी हो और उसका अभ्यास ऐसे करें, सुबह बिस्तर छोड़ने से पहले सुविचार और फिर निर्विचार करें, प्रकृति की सैर करें वो भी अकेले, डिजिटल डीटॉक्स करें। अंत में धन्यवाद ज्ञापन एवं कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्षा रूपकला भंडारी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

✦ *वे व्यक्ति धन्य हैं, कृतपुण्य हैं, जिनके मन में सत्य के प्रति आकर्षण होता है, जो असत्य से बचने का प्रयास करते हैं।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलमय विहार व मंगलभावना

जयपुर।

बहुश्रुत परिषद की सम्मान्य सदस्या साध्वी कनकश्री जी का श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में सफलतम वर्षायोग तथा सार्थक प्रवास के पश्चात सहवर्तिनी साध्वियों के साथ भव्य जुलूस के साथ विहार हुआ। इससे पूर्व तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में आयोजित मंगलभावना कार्यक्रम में समाज की सभी सभा-संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। आपके उत्तम आरोग्य और शुभ भविष्य की मंगलकामना की।

कार्यक्रम का शुभारंभ संदीप भंडारी के मधुर गीत से हुआ। नोरतनमल नखत अध्यक्ष भि०सा० केंद्र ने आपके प्रवास को प्रभावी और यादगार बताते हुए कहा कि आप श्यामनगर क्षेत्र को संभालते रहें, भवन में विराजने की पुनः कृपा कराएँ। हिम्मत डोसी अध्यक्ष तेरापंथ सभा, जयपुर ने संपूर्ण तेरापंथी समाज की तरफ से मंगलभावना व्यक्त करते हुए परमपूज्य आचार्यप्रवर की कृपा के लिए कृतज्ञता व्यक्त की और कहा कि शासन गौरव साध्वीश्री का पुनः जयपुर पावस प्रवास प्राप्त कर हम स्वयं को गौरवशाली महसूस कर रहे हैं।

मौके पर तेमम, सी-स्कीम अध्यक्ष नीरू पुगलिया, महिला मंडल, शहर स्नेहलता डोसी, तेयुप, जयपुर अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष राजेंद्र बांठिया, सभा मंत्री सुरेंद्र सेखाणी, टीपीएफ अध्यक्ष संदीप जैन, नंदिता डागा आदि अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने श्रद्धालुओं की भक्तिभरी कोमल भावनाओं को स्वीकार करते हुए कहा कि जयपुर प्रवास काल में जो भी जागृति मूलक उपक्रम चले, वह सब गुरु कृपा का ही सुपरिणाम है। हमारा शक्ति केंद्र पावर हाउस, गुरु चरण हैं। हम तो निमित्त मात्र हैं। जयपुर तथा श्यामनगर के श्रावक समाज की श्रद्धा, भक्ति, संघनिष्ठा आदि के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए आपने कहा–श्रावक समाज गुरु दृष्टि की आराधना करता हुआ साधु-साध्वियों के सान्निध्य का पूरा लाभ उठाने का प्रयास करे। साध्वीश्री ने अपनी सहवर्ती साध्वियों की दायित्वनिष्ठा एवं श्रमनिष्ठा की सराहना करते हुए उनके प्रति मंगलकामना की।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि शासन गौरव साध्वीश्री जी के अप्रमत्त जीवन का प्रत्येक लम्हा हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। आत्म साधना और संघ सेवा में समर्पित आपका जीवन पवित्रता और सहजता का पर्याय है। जिज्ञासु व समस्याग्रस्त भाई-बहनों को आप उदारतापूर्वक समय प्रदान करती हैं। उनकी जिज्ञासाओं तथा समस्याओं का समाधान देती है। कार्यक्रम का संचालन सुशीला नखत ने किया।

समणी केंद्र के लिए मंगल प्रवेश

हिरियुर (कर्नाटक)।

डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी व डॉ० समणी मानसप्रज्ञा जी का तेरापंथ भवन, हिरियुर में समणी केंद्र के लिए प्रवेश हुआ। डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि यह केंद्र समूचे उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सेवा समिति के लिए है। सभी इसे सदुपयोगी बनाएँ। समणी जी ने आगामी दिनों में आयोजित होने वाले संघीय कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया। इस दुनिया में तीन तरह के बल होते हैं–जैसे जनबल, धनबल और धर्मबल। सभी कार्यक्रमों के द्वारा धर्मसंघ व क्षेत्र का जस व धर्मबल बड़े इस ओर प्रयासरत होना चाहिए। समणीजी ने कहा कि लाइफ यानी लिव इन फुल एनर्जी में जीना चाहिए। डॉ० मानसप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त किए और ज्ञानशाला पर विशेष ध्यान देने और प्रतिदिन ज्ञानशाला चलाने की बात कही।

स्वागत कार्यक्रम का महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण से आगाज हुआ। तेरापंथ सभाध्यक्ष दीपचंद चोपड़ा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और समणीवृंद का श्रद्धा का क्षेत्र हिरियुर नगर में स्वागत अभिनंदन किया। उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जयंतीलाल चोपड़ा, महिला मंडल मंत्री लक्ष्मीदेवी लुंकड़ ने स्वागत एवं अपने विचार व्यक्त किए। समणीवृंद द्वारा मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन देवराज चोपड़ा ने किया।

अभातेयुप संगठन यात्रा का आयोजन

पांडिचेरी।

श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन मंदिर, पांडिचेरी में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में तेरापंथ के प्रथम नागरिक श्रावक 'संस्था शिरोमणी' महासभाध्यक्ष ने अपनी संगठन यात्रा के दौरान तेरापंथ की गतिविधियों, नव-आयाम एवं 'अध्यात्म का शांतिपीठ महाप्रज्ञ म्यूजियम' का दर्शन विषयक विशेष बातें रखी।

आंचलिक प्रभारी ज्ञानचंद आंचलिया ने विचार व्यक्त किए। कडलूर क्षेत्र से उपासक सौभाग सांड ने मंगलगीत प्रस्तुत किया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि हमारा संघ प्राणवान धर्मसंघ है, जो गुरु ने फरमा दिया वह लोहे की लकीर और लक्ष्मण रेखा बन जाती है। कितनी-कितनी गतिविधियाँ हमारे धर्मसंघ में चल रही हैं। उन्हें सुचारु रूप से चलाते हैं श्रद्धाशील श्रावक! महासभा को परमपूज्य गुरुवर ने 'संस्था शिरोमणी' से उपमित किया हुआ है।

कार्यक्रम का संचालन पांडिचेरी सभाध्यक्ष हेमराज कुंडलिया ने किया। इस दौरान कडलूर, पांडिचेरी, सिरकाली से श्रावकगण उपस्थित हुए।

'कर्म विज्ञान और कालू तत्त्व शतक' पर आधारित बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन

जसोल।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम, जसोल द्वारा अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में 'कर्म विज्ञान और कालू तत्त्व शतक' आयोजित की गई। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से गेम प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया।

महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने गेम के नियम बताए और सभी प्रतियोगियों को शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम में कुल ८ बहनों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर महिला मंडल संरक्षिका पुष्पा देवी बुरड़, द्वितीय स्थान पर उपासिका लीलादेवी सालेचा सहित बाकी बहनों को सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। बहनों ने कहा कि इस गेम से थोकड़ों का अच्छा स्वाध्याय हो जाता है।

समय-समय पर ऐसे गेम होते रहने चाहिए। बहनों ने बड़े उत्साह से इस प्रतियोगिता में भाग लिया। अध्यक्षा सोहनी देवी सालेचा ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और आभार ज्ञापन किया।

पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन

पांडिचेरी।

साध्वी लावण्याश्री जी के सान्निध्य में पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन मंदिर परिसर में रविपुष्य नक्षत्र के विशिष्ट योग के उपलक्ष्य में पैंसठिया छंद अनुष्ठान का विशेष आयोजन किया गया।

दो चरण में कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने अनुष्ठान करवाया। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने पैंसठिया छंद का महत्त्व बताया। साध्वी लावण्याश्री जी ने कहा कि तन्मयतापूर्ण, शुद्ध भावों से की गई मंत्र साधना व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक बनती है, आत्मोन्नति के मार्ग को खोलती हैं। आज के रविपुष्य नक्षत्र के शुभ योग पर पैंसठिया छंद का अनुष्ठान हुआ। यह मंत्र साधना का विशिष्ट योग है। इसमें जैन धर्म के अतिविशिष्ट महापुरुष २४ तीर्थंकरों की स्तुति की जाती है। यह मंत्र कष्ट निवारक, आनंद प्रदायक, शांतिदायक है।

साध्वी लावण्यश्री जी ने तेरापंथ का संविधान, मर्यादाओं का वाचन करते हुए कहा कि हमारा धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित संघ है। हम एक गुरु की छत्रछाया में हमेशा निश्चित रहते हैं। साध्वीवृंद द्वारा लेख पत्र का वाचन किया गया। उपासक सौभागमल सांड ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया, जिसे सभी ने संकल्पों को स्वीकार किया। इस अनुष्ठान में पांडिचेरी के साथ कडलूर, तिन्डिवनम् आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

हमारे मन की उपज है नकारात्मक विचार

चंडीगढ़।

चिंतित होना एक स्वाभाविक घटना है। यह तब महसूस होता है जब व्यक्ति किसी भी तरह के वास्तविक या कथित खतरे का सामना करता है। भीड़ के सामने बोलने, कैमरे का सामना करने या परीक्षा में प्रवेश करने से ठीक पहले एक व्यक्ति चिंतन का अनुभव कर सकता है। कुछ लोगों के लिए यह चिंताजनक महसूस करने का सामान्य अनुभव अधिक सामान्य और अक्सर होता है। इससे उनके दैनिक जीवन के कार्य और रिश्तों में क्लेश आदि का हस्तक्षेप होने लगता है। मन द्वारा ही रोग अथवा चिंता की समाप्ति संभव है तथा मन द्वारा ही अच्छे स्वास्थ्य अथवा प्रसन्नता की प्राप्ति संभव है। संसार में वे व्यक्ति ही भौतिक और सामाजिक परिस्थितियों में अपने को समायोजित कर पाते हैं, जिनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन के तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भय कल्पना मात्र है, जो हमारे मन की उपज है। यह एक नकारात्मक विचार है। मन से भय का चिंतन समाप्त हो जाना, उसका नकारात्मक विचारों से मुक्त हो जाना ही उपचार है।

मुनिश्री ने कहा कि मन में रोग के भय के चिंतन से मुक्त हो जाइए। जब तक भय से मुक्त नहीं होंगे, तब तक बात नहीं बनेगी। रोग के भय से मुक्त होना ही रोग मुक्त होना है। आरोग्य के लिए रोग के भय से मुक्ति, समृद्धि के लिए अभाव के भय से मुक्ति, जीवन को संपूर्णतया से जीने के लिए मृत्यु के भय से मुक्ति, ज्ञान के लिए अज्ञानता के भय से मुक्ति, प्रकाश के लिए अंधकार के भय से मुक्ति, प्रेम के लिए घृणा से, भय से मुक्ति, विजय के लिए पराजय के भय से मुक्ति–भय से मुक्त होना ही सर्वांगीण विकास का एकमात्र मार्ग है।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

भिवानी।

मुनि जयकुमार जी एवं शासनश्री साध्वी सरोज कुमारी जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। भक्तों के दिल में खुशियों का सागर उमड़ रहा था। खुशी को अभिव्यक्ति देते हुए जैन विश्व भारती के परामर्शक सुरेंद्र जैन 'एडवोकेट' ने कहा कि मुनिश्री ने भिवानी में पुनः पदार्पण कर भिवानी के भक्तों को भाव-विभोर कर दिया।

सभा के अध्यक्ष महेंद्र ने मुनिश्री को निवेदन किया कि दो दिन के लघु प्रवास से भक्तों में आह्लाद है, यदि प्रवास बढ़ जाता तो यह खुशियाँ असीम हो जातीं। इसी क्रम में हांसी से आए श्रावकगण ने भी हांसी पदार्पण के लिए सविनय निवेदन किया। उपासिका मधु जैन ने भी अपनी खुशियाँ व्यक्त की।

कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति सराहनीय रही।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

चेन्नई।
जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत तेरापंथी सभा, चेन्नई द्वारा संचालित २५ ज्ञानशाला शाखाओं का वर्ष-२०२२ का संयुक्त वार्षिकोत्सव ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट भवन में आयोजित किया गया। प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

सभाध्यक्ष उगमराज सांड ने स्वागत वक्तव्य में सबको वार्षिकोत्सव की बधाई संप्रेषित करते हुए ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षकों के लगन व श्रम की प्रशंसा की। उन्होंने कार्यक्रम के प्रायोजक तथा ज्ञानशाला सहयोगी परिवार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

आंचलिक संयोजक अनिता चोपड़ा ने ज्ञानार्थियों को सभ्य नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हुए अनेक अच्छी आदतों में से कोई एक संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्यारेलाल पितलिया ने अपने ज्ञानशाला की महत्ता को उजागर किया।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी, साध्वी लावण्यश्री जी व साध्वी शिवमाला जी से प्राप्त मंगल संदेशों को बड़े पर्दे पर दिखाया तथा वाचन किया गया।

ज्ञानशाला प्रभारी सुरेश तातेड़ ने ज्ञानशाला की गतिविधियों का उल्लेख कर वर्षभर का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया एवं आभार व्यक्त किया। ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला प्रारूप की रोचक प्रस्तुति दी। उच्चारण शुद्धि प्रस्तुति में सभी ज्ञानशालाओं के नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थियों ने प्रभावशाली प्रस्तुति दी।

सौभाग्य व संयोगवश गढ़ सिवाना से समागत मुमुक्षु बहन का परिचय करवाते हुए सभामंत्री अशोक खतंग ने ज्ञानशाला के बारे में भी विचार व्यक्त किए। मुमुक्षु बहन ने अपनी भावना प्रस्तुति में ज्ञानशाला को उनके वैराग्य का एक हेतु बताया।

कार्यक्रम की योजना व क्रियान्वयन में राजश्री डागा, सुबोध सेठिया, राजेंद्र भंडारी, मनोज गादिया, गजेंद्र खांटेड का निर्देशन व प्रबंधन विशेष उल्लेखनीय रहा।

कार्यक्रम के प्रारूप निर्धारण से संचालन तक संयोजक सपना श्रीश्रीमाल, उषा आंचलिया, सह-संयोजक, अंजु आच्छा, रक्षा आच्छा, सारिका मरलेचा, विजया सियाल के योजनाबद्ध कार्य से कार्यक्रम सुनियोजित रूप से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मध्य में प्रायोजक मनीष कुमार, संयम सांखला परिवार, ज्ञानशाला सहयोगी विजय कुमार, भरत कटारिया परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में पुरस्कार तथा भोजन व्यवस्था में ज्ञानशाला राजेश सांड, देवेंद्र सुराणा, गजेंद्र गादिया, ताराचंद बोहरा का विशेष श्रम तथा पवन मांडोत, भरत मरलेचा, तरुण दुगड़, हेमंत मालू, पुखराज पारख, मनोज डूंगरवाल आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम का यू-ट्यूब पर जीवंत प्रसारण किया गया।

कार्यक्रम की भूमिका में महासभा प्रतिनिधि ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक अनिता चोपड़ा व सह-संयोजिका कविता रायसोनी का निर्देशन उपयोगी रहा। कार्यक्रम में ३३८ ज्ञानार्थियों, १२५ प्रशिक्षकों के साथ अनेक ज्ञानशाला कार्यकर्ता उपस्थित थे। ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षकों के मनोजरंजन के लिए अनेक रोमांचक खेल आयोजित किए गए।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा में वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों तथा ज्ञानशाला की आयु सीमा पार करने वाले ज्ञानार्थियों को प्रमाण-पत्र, पुरस्कार व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला प्रशिक्षकों व कार्यकर्ताओं का भी मंचीय सम्मान इस अवसर पर किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन सभा सहमंत्री मनोज गादिया ने किया।

संस्कार निर्माण की बुनियाद है ज्ञानशाला

लिलुआ।
मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में जी०टी० रोड, लिलुआ में विधिवत ज्ञानशाला शुभारंभ का कार्यक्रम हुगली रेसीडेंसी में हुआ। जिसमें १३ बालक-बालिकाएँ थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संस्कार जीवन की बुनियाद है। सद्संस्कारों का ज्ञान वर्तमान युग में अक्षर ज्ञान से भी ज्यादा जरूरी है। इसके बिना किताबी ज्ञान की महत्ता की सुरक्षा कैसे की जा सकेगी। शिक्षा के साथ सद्संस्कारों का ज्ञान जरूरी है। जीवन के सुनहरे सपनों को साकार रूप देने वाला तत्त्व है—संस्कार। संस्कारों के जागरण से भाग्योदय, सर्वोदय, आत्मोदय होता है। संस्कारों के संवर्धन, संरक्षण व पल्लवन के लिए ज्ञानशाला जरूरी है। ज्ञानशाला के माध्यम से व्यक्ति चहुँमुखी विकास कर सकता है। ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी का महत्त्वपूर्ण आयाम है और नौनिहाल पीढ़ी को चारित्रवान बनाने का विशेष उपक्रम है। आज ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षिकाएँ उत्साह व निष्ठा के साथ बच्चों के विकास में सहयोगी बनें।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने विचार रखे। कोलकाता व दक्षिण बंगाल प्रभारी डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने ज्ञानशाला के बारे में बताया कि क्षेत्रीय ज्ञानशाला सहयोगी मंजु घोड़ावत, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बबीता पारख, वंदना बरड़िया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रमिला बाफना ने विचार रखे। ज्ञानार्थी पारस लुणिया ने गीत का संगान किया। प्रिया डागा एवं मनीषा दुगड़ ज्ञानशाला में सहायक के रूप में सेवा देगी। वंदना बरड़िया को मुख्य प्रशिक्षिका के रूप में मनोनीत किया गया। इस अवसर पर जैन समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साध्वीश्री का स्वागत समारोह

कोदाड (तेलंगाना)।
चेन्नई, साहूकारपेट में चातुर्मास संपन्न कर आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार सिकंदराबाद, हैदराबाद चातुर्मास के लिए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वीवृंद के साथ प्रस्थान किया। मार्गवर्ती श्रद्धा क्षेत्रों का स्पर्श एवं प्रवास करते हुए आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा शहर में मर्यादा महोत्सव किया।

प्रबुद्ध चातुर्मास प्राप्त कर श्रावक समाज ने प्रसन्नता व्यक्त की। विहार सेवा में श्रावकों एवं श्राविकाओं का आगमन निरंतर जारी है। हरी-भरी धरती का सुरम्य दृश्य एवं आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना प्रवासियों के मन में श्रद्धा भाव देखते बनता है। इस यात्रा में अनेक शैक्षणिक संस्थानों में साध्वीवृंद का प्रवास हुआ, उनके मन में उठी जिज्ञासाओं का साध्वीश्री द्वारा समाधान किया गया।

तेलंगाना प्रवेश के अवसर पर श्रावक भीखमचंद बैद, उपासक राजेश भूतोड़िया, श्राविका पानादेवी गोलछा एवं विमला देवी भंरूट उपस्थित रहे। साध्वीश्री जी ने सीमा प्रवेश के अवसर पर मंगलपाठ के साथ मंगलभाव व्यक्त किए।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सुरक्षित रखें संस्कारों की विरासत

बैंगलुरु।
तेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में राजकुमार दुगड़, शैषाद्रीपुरम् के निवास स्थान पर 'सुरक्षित रखें संस्कारों की विरासत' कार्यशाला आयोजित की गई। मंगलाचरण तेयुप साथियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि जीवन खान से निकला पत्थर है। उसे तराशने पर प्रतिमा का रूप दिया जा सकता है। किंतु उसके लिए संस्कृति, सभ्यता और सहिष्णुता की अपेक्षा है। व्यक्ति अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है, विकृति का जीवन जी रहा है। खानपान की अशुद्धि ने खानपान को अशुद्ध बना दिया है। हमारी बारहखड़ी अज्ञान से शुरू होती है और ज्ञान के साथ समाप्त होती है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने लिखा है पाश्चात्य संस्कृति टेलर की संस्कृति है और भारतीय संस्कृति कैरेक्टर की है।

साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा ने किया। मंच संचालन अमित भंडारी ने किया। कार्यशाला में मंत्री विकास बाबेल, सहमंत्री विनोद कोठारी, प्रवीण बोहरा, विवेक मरोठी, विमल धारीवाल, आलोक कुंडलिया, प्रतीक जोगड़ और तेयुप साथियों एवं श्रावक समाज की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर।
तेयुप, जयपुर के द्वारा स्व० सत्येंद्र जैन की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर राजमल देवेंद्र कुमार जैन महारानी फार्म के सौजन्य से सीतापुरा स्थित कॉम्यूकॉम में आयोजित रक्तदान शिविर में संतोकबा दुर्लब जी ब्लड बैंक की टीम के द्वारा ६२ यूनिट रक्त का संग्रह किया गया।

परिषद् के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा की उपस्थिति में काम्पूकॉम के डायरेक्टर सुरेंद्र सुराणा व शिविर संयोजक वरुण बरड़िया ने ४०वाँ रक्तदान किया और संगठन मंत्री मोहित गधैया, संयोजक दीपक भंसाली, कार्यसमिति सदस्य सौरभ जैन, जयंत भूरा, मुदित बच्छावत, दीपक जैन तथा काम्पूकॉम से पवन अग्रवाल, प्रीति एवं प्रायोजक परिवार से देवेंद्र जैन ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया।

तेयुप द्वारा बैठक का आयोजन

जसोल।
तेयुप, जसोल द्वारा आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि डॉ० योगेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप सदस्यों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। मुनि दिनेश कुमार जी ने कैसे संगठन को मजबूत करें इसके बारे में बताया। मुनि योगेश कुमार जी ने आध्यात्मिक आयामों को बताया।

तेयुप के सदस्यों ने अनेक प्रश्न मुनिश्री से वार्तालाप किए। मुनिश्री ने प्रश्नों के उत्तर दिए। तेयुप, जसोल की बैठक में लगभग १५० युवक उपस्थित थे। तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। आभार व्यक्त उपाध्यक्ष प्रथम मनीष बोकड़िया ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पर्वत पाटिया।
अभातेयुप का मूल आधार स्तंभ है—सेवा-संस्कार-संगठन जिसके अंतर्गत जैन संस्कार विधि से मेगा ब्लड डोनेशन के तहत रक्तदान शिविर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपादित किया गया। संस्कारक पवन बुच्चा एवं रवि मालू ने नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार के साथ रक्तदान शिविर अभियान के कार्यक्रम की शुरुआत करवाई।

शुभ प्लाजा के कार्यकारिणी सदस्य अमित बुच्चा के विशेष सहयोग एवं सेवियर ब्लड बैंक की सहायता से ३६ रक्त यूनिट संग्रहित हुई तथा इस रक्तदान शिविर के महा अभियान के शुभारंभ में तेयुप अध्यक्ष के साथ-साथ उनकी संपूर्ण प्रबंध मंडल की विशेष उपस्थिति रही। अमित बुच्चा का शॉल एवं साहित्य द्वारा स्वागत किया गया।

✦ *आदमी को भावशुद्धि रखने का प्रयास करना चाहिए। यही जीवन-विज्ञान की आत्मा है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

कोलकाता स्तरीय विशाल युवा सम्मेलन का आयोजन

युवा समाज की तस्वीर है-तकदीर है-जमीर है

लिलुआ (कोलकाता)।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में कोलकाता स्तरीय युवा सम्मेलन-२०२३ का आयोजन तेयुप, लिलुआ द्वारा जी०टी० रोड स्थित हनुमान भक्त मंडल प्रांगण में किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि सामाजिक एवं धार्मिक चेतना के जागरण का एक सशक्त माध्यम है—संगठन। संगठन में शक्ति होती है। शक्ति, शक्ति को आकर्षित करती है। शक्ति व दायित्व बोध के अभाव में अच्छे-से-अच्छा संगठन भी तिनकों की तरह बिखर जाता है। उद्देश्य और दायित्व के साथ चलने वाला छोटे से छोटा संगठन भी आकाशव्यापी ऊँचाई को प्राप्त कर सकता है। संगठन का अर्थ है साथ में रहना। संगठन प्राणवान है तो बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से किया जा सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि संगठन को दीर्घजीवी व मजबूत बनाने के लिए सहिष्णुता, सामंजस्य, समर्पण, विश्वास, श्रम, मधुर भाषा, मधुर व्यवहार, सकारात्मक चिंतन, श्रम आदि गुणों की आवश्यकता रहती है। युवा समाज की तस्वीर है, समाज की तकदीर है, समाज की जमीर है, पराक्रम का प्रतीक है, समाज का प्रतिबिंब है, ऊर्जा का अक्षय भंडार है। युवा वायु की तरह गतिशील रहे। युवा व्यसन और फैशन से बचे, होटल और बोटल से बचे। देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखे। संस्कार और संस्कृति की सुरक्षा रखते हुए सेवा भावना व सहयोग का विकास करे। प्रेम दुनिया का सबसे खूबसूरत पौधा है, जो जमीन पर नहीं दिल में उगता है। लिलुआ की

युवाशक्ति ने उत्साह के साथ कार्य किया। वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

अभातेयुप के अध्यक्ष पंकज डागा ने अपने वक्तव्य में युवाशक्ति को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा वह है जो चट्टानों को चीर दे, वायु को भी पीछे धकेल दे। युवा बड़ा और मजबूत संकल्प करेगा तो लक्ष्य भी छोटा हो जाएगा। युवा एवं किशोरों में जैनत्व के संस्कार सुरक्षित रहने चाहिए। तेरापंथ का यह युवा संगठन हमें सम्मान, जीने की राह और स्वाभिमान देता है। युवा सम्मेलन में सम्मिलित होकर कोलकाता की ११ परिषदों ने एकजुटता व समर्पण का कदम उठाया है। लिलुआ संख्या की दृष्टि से भले छोटी परिषद है पर आज मुनिश्री के सान्निध्य में युवा सम्मेलन कर बड़ी हो गई है इनका जज्बा और उत्साह काबिले तारीफ है।

अभातेयुप के उपाध्यक्ष-प्रथम रमेश डागा ने कहा कि युवा अवस्था में विभिन्न जिम्मेदारियों के साथ धर्मसंघ एवं संगठन से जुड़ें एवं अपना समय दें। अभातेयुप के सहमंत्री अनंत बागरेचा ने कहा कि संगठन को समझ लें तो जीवन जीना आसान हो जाएगा। सभी युवा कम से कम सप्ताह में एक दिन अवश्य चारित्रात्माओं के दर्शन करें।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। विजयगीत का संगान लिलुआ, तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने सम्मेलन के उद्घाटन की घोषणा की। स्वागत भाषण लिलुआ, तेयुप के अध्यक्ष अमित बांठिया ने व शुभकामना लिलुआ तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रमिल बाफना ने दी। अतिथि परिचय अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य जय चोरड़िया ने दिया। पुणे से समागत साइबर एक्सपर्ट संदीप प्रकाश गादिया ने साइबर क्राइम एवं सुरक्षा विषय पर युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। अभातेयुप के पदाधिकारियों का पंचरंगी पट्टे से सम्मान किया गया।

उत्तर हावड़ा, तेयुप, किशोर मंडल द्वारा क्वीज का संचालन किया गया। विजेताओं को तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया। साइबर एक्सपर्ट संदीप गादिया आदि का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन लिलुआ तेयुप के मंत्री अंकुश छाजेड़ ने किया। अंतिम सत्र तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक मानव बैद ने किया। युवा सम्मेलन में २२० से अधिक युवक एवं समस्त लगभग ८०० श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति दर्ज की गई।

कार्यक्रम में प्रबुद्ध विचारक नवीन बैंगानी, साईबर एक्सपर्ट संदीप प्रकाश गादिया, कार्यकारिणी सदस्य, सुनील दुगड़, संदीप डागा, सुमित कोठारी, सूर्यप्रकाश डागा, प्रवीण सिंघी, बिरेंद्र बोहरा आदि गणमान्य लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

अभातेयुप द्वारा किए जा रहे आई डोनेशन कार्य के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा का सम्मान म०पी० बिड़ला आई बैंक द्वारा किया गया।

इस सम्मेलन में बृहत्तर कोलकाता की ११ शाखा परिषदों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। लिलुआ, हिंदमोटर, साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, दक्षिण कोलकाता, पूर्णांचल, बेहाला, टॉलीगंज, उत्तर कोलकाता, कोलकाता मैन, मध्य उत्तर कोलकाता शाखा परिषदों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप के कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। लिलुआ तेरापंथी सभा का भी सहयोग रहा।

एटीडीसी में नई मशीनों का उद्घाटन

विजयनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर कामाक्षीपल्या में नूतन मशीनों का विस्तारीकरण करते हुए इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम मशीन और आर०वी०जी० मशीन का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक विकास बांठिया एवं कमलेश चोपड़ा ने निर्दिष्ट मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न करवाया।

प्रायोजक बालचंद, नानालाल पोखरणा, धर्मचंद, कमलेश कुमार, मांडोत, रोशनलाल, अशोक कुमार मारू का मोमेंटो एवं जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया।

अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, अभातेयुप से दिनेश मरोठी, सतीश पोरवाड़, विशाल पितलिया, गौतम खाब्या, अमित दक, महावीर टेबा, तेरापंथ सभा विजयनगर अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री राकेश पोखरणा ने किया।

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी को वीतराग के बारे में समझाया गया। ज्ञानार्थियों ने साध्वीश्री जी से वीतराग पथ के बारे में अनेकों प्रश्न पूछे।

इस कार्यशाला में ५२ ज्ञानार्थी संभागी बने। ज्ञानशाला संयोजक संपतराज चोपड़ा, उपासिका लीलादेवी, तेमम मंत्री ममता मेहता, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

✦ *हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

व्यक्ति भोजन, भजन, भाषा और विभूषा पर ध्यान देकर आत्मा को पवित्र बनाए : आचार्यश्री महाश्रमण

कियारिया, १६ फरवरी, २०२३

दिव्य शक्ति के भंडार आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर कियारिया ग्राम कॉस्मो रेसीडेंसी पधारे। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में दिव्य पुरुष ने फरमाया कि आदमी जीवन जीता है। एक प्रश्न किया जा सकता है कि हम जीवन क्यों जीएँ? जीवन जीने का हमारा प्रयोजन क्या है। जीवन जीने के लिए बहुत कुछ करना होता है, समय लगाना पड़ता है।

हम जीवन के लिए बहुत कुछ करते हैं, उसका आखिर लाभ क्या मिलेगा? जैन वाङ्मय में बताया गया है कि एक बड़ा लाभ इस जीवन से मिल सकता है—पूर्व कर्मों का क्षय करना। यह लाभ हमें जीवन जीने से और शरीर को धारण करने से मिल सकता है। जीवन है तो साधना-तपस्या, स्वाध्याय, जप, वैयावृत्य करें तो पूर्व कर्म की निर्जरा का लाभ मिल सकता है।

जन्म-मरण की परंपरा चल रही है, इस परंपरा से छुटकारा पाना, मोक्ष पाना, यह परम लाभ होता है। वह लाभ इस मानव जीवन में बहुत अच्छे ढंग से पाया जा सकता है। मनुष्य जीवन के सिवाय कोई भी योनी के जीव मोक्ष प्राप्त कर नहीं सकते। मनुष्य जन्म से ही सीधा मोक्ष में जाया जा सकता है। इसके लिए संवर की साधना और कर्म निर्जरा करनी होगी। हम मोक्ष की ओर आगे बढ़ जाएँ तो बहुत बड़ा लाभ मिल सकता है।

शरीर को टिकाना है, तो खाना-पीना भी होता है। तपस्या करने के लिए भी बीच-बीच में खाना जरूरी है। भजन करने से पहले भोजन आवश्यक है। भोजन जीवन के लिए है, पर जीवन भोजन के लिए न हो। जीवन साधना के लिए हो। भोजन तो जीवन का साध्य नहीं है, साधन है।

आदमी भोजन, भजन, भाषा और भूषा पर भी ध्यान दे। णमोकार मंत्र कंठ और मन में रहे। णमोकार महामंत्र जैन होने की पहचान है। भजन करने से ही भोजन की सार्थकता है। भोजन में भी संयम हो। भाषा भी अयथार्थ-कटु न हो। मीठा बोलो। हर सत्य बोलना जरूरी नहीं है। साधु के मृषावाद बोलने का त्याग है, पर हर सत्य बोलना जरूरी नहीं है। बोलें तो सत्य ही बोलें।

अहिंसा और मैत्री का जीवन जीएँ। साधु विभूषा से बचे, सहज रहे। भीतर की सद्गुणों की भूषा तैयार करो। विभूषा जो बाहर की है, वो भारभूत है। हम सद्गुणों के आभूषण पहनें। हम भोजन, भजन, भाषा और विभूषा पर ध्यान देकर आत्मा को अच्छा बनाने का प्रयास करें। पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए इस शरीर को धारण करें।

आनंदमय जीवन पाने के लिए रहें अनासक्त : आचार्यश्री महाश्रमण

दंताणी, १५ फरवरी, २०२३

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर दंताणी के अचलगच्छीय मंदिर परिसर में पधारे। शांतिदूत ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी जीवन जीता है। जीवन जीने के लिए प्रवृत्ति करनी होती है। इन सारे व्यवहारों के लिए सक्रिय होना पड़ता है। कर्म करना होता है।

प्रवृत्ति-कर्म है, उसके साथ आसक्ति जुड़ जाती है, तो वह आसक्ति विशेष बंधन कराने वाली बन सकती है। प्रवृत्ति में आसक्ति या बंधन न हो या हो तो हल्का हो सकती है। बंधन पाप-कर्म का नहीं होना चाहिए।

पाप कर्म का मूल मोहनीय कर्म होता है। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। साधु भी प्रवृत्ति करता है, तो सामान्य गृहस्थ भी प्रवृत्ति करता है। साधु का खाना निर्जरा का कारण बन सकता है। गृहस्थ का परिभोग बंधन का कारक हो सकता है। महत्त्वपूर्ण बात है, जीवन में अनासक्ति रहे। जैसे कमल पत्र जल में रहकर भी जल से अलिप्त रहता है। इसी प्रकार संसाररूपी जल में रहते हुए, प्रवृत्ति करते हुए भी गृहस्थ अलिप्त रहने का प्रयास करे।

एक गृहस्थ सम्यक्-दृष्टि श्रावक है, अनासक्ति का साधक है, कुटुम्ब-परिवार में रहते हुए भी वह अलिप्त रहने का प्रयास करे। अलिप्त धाय-माता की तरह। अमृत्व भाव रहे, भीतर में मोह-मूढ़ता न हो। अनासक्ति की चेतना से सघन बंधन से बचा जा सकता है। न निंदा, न प्रशंसा, शांति में रहो।

एक प्रसंग से समझाया कि गृहस्थ के मेरा-मेरा होता है, पर साधु के न मेरा न तेरा। यह आसक्ति-अनासक्ति का अंतर है। जहाँ त्याग-संयम और अनासक्ति है, उससे जो आनंद-शांति रह सकती है, वह कामना-आसक्ति में कहाँ मिल सकती है। आसक्ति राक्षसी है, जो आनंद को खा जाने वाली है।

त्याग-योग धर्म, भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म है। असंयम अधर्म है, संयम धर्म है। तपस्या-अहिंसा धर्म है। धर्म को अपनाने का, साधना आराधना करने का प्रयास करें। पद से भी बड़ा हो सकता है, पर साधु का पद तो चक्रवर्ती से भी बड़ा है। साधु का पद त्याग-संयम से मिलने वाला है। श्रावक होना भी एक पदवी है, श्रावक में भी संयम होता है। जीवन में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति रहे, वह भी अच्छी बात है।

हम भगवान महावीर के जैन शासन में जी रहे हैं, जहाँ समता-वीतरागता, संयम, तप और अहिंसा की बात है। ऐसा साया हमें मिलता रहे। जीवनशैली अच्छी हो। गार्हस्थ्य में भी साधुता-धर्म रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अचलगच्छीय साधु मुनि मोक्ष चंद्र सागर जी, वीर शेखर सागर जी पधारे। मुनि वीर शेखर सागर जी ने अपनी भावना भी अभिव्यक्त की। स्थानीय सरपंच नितीश अग्रवाल, मंदिर परिसर से मोहन भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। आबु रोड जैन संघ के सदस्यों ने पूज्यप्रवर से आबु रोड पधारने की विनती की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यक्ति के जीवन में हो कर्तव्य और अकर्तव्य का विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

हड़ाद, मचकोड़ा ग्राम, २० फरवरी, २०२३

दिव्य शक्ति के भंडार आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १८ का विहार कर मचकोड़ा ग्राम पधारे। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में कर्तव्य और अकर्तव्य का विवेक होना चाहिए। विवेक एक अच्छी बात होती है। कर्तव्य और अकर्तव्य क्या है, यह विवेचन होना चाहिए।

जिस आदमी में कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध होता है, वो उस विषय में विवेकशील है। जिसमें यह ज्ञान नहीं होता है, वह नुकसान में भी जा सकता है। गुरुदेव तुलसी का एक छोटा-सा ग्रंथ है—'कर्तव्य षट् त्रिंशिका'। उसके पहले श्लोक में कहा गया है कि जिसे कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान नहीं है, उसका कभी ऐसा अनिष्ट हो सकता है। जो उसने सोचा भी न हो।

कर्तव्य-अकर्तव्य के विवेक से जो शून्य होते हैं, उनमें एक प्रकार का पशुत्व आ जाता है। अपना-अपना कर्तव्य हो सकता है। साधु का सबसे पहला कर्तव्य है, अपने साधुत्व की सुरक्षा करना। इसके आगे दूसरे कार्य गौण हो सकते हैं। साधुपन पहली चीज है। अपनी आत्मा की साधना करे, वह साधु होता है।

गृहस्थ हो या साधु फालतू निकम्मा न बैठा रहे, कोई अच्छे काम में लगे रहो। माता-पिता होने के नाते संतान के प्रति कर्तव्य हो जाते हैं, ऐसे अनेक कर्तव्य गृहस्थ के हो सकते हैं। माता-पिता अच्छे संस्कार देने वाले हों, बच्चे को अच्छा पढ़ाएँ। अन्यथा वे संतान के शत्रु हो सकते हैं। माता-पिता मिलकर बच्चे पर बहुत उपकार करते हैं।

माता-पिता का संतान के प्रति कर्तव्य होता है तो संतान का भी माता-पिता के प्रति कर्तव्य होता है। हम बच्चे थे तो माँ-बाप ने सेवा की थी, अब हम बड़े हो गए हैं, तो माँ-बाप की सेवा हम करें। माता-पिता को धार्मिक सहयोग दें। हम हमारे धार्मिक कर्तव्यों के प्रति विशेषतया जागरूक रहें। कर्तव्य बोध और कर्तव्य का पालन अच्छा होता है, तो वो जीवन और आत्मा के लिए हितकर-कल्याणकारी हो सकता है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 फरवरी - 5 मार्च, 2023

✦ *सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत अमृत महोत्सव का भव्य आगाज

आदमी की चेतना में सत् संकल्प को सन्निहित करता है अणुव्रत आंदोलन : आचार्यश्री महाश्रमण

आगामी एक वर्ष तक आचार्यप्रवर की यात्रा 'अणुव्रत यात्रा' के रूप में घोषित

खैरोज, २१फरवरी, २०२३

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया-अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी की वार्षिक जन्म तिथि। आज ही के दिन आचार्यश्री तुलसी ने ७४ वर्ष पूर्व सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का आगाज किया था। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का आज से 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' का शुभारंभ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में हुआ। पूज्यप्रवर ने 'संयमः खलु जीवनम्' एवं गुरुदेव तुलसी के जयकारे के घोष के साथ अमृत महोत्सव के शुभारंभ की घोषणा की।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत ध्वज फहराया गया एवं अणुव्रत अमृत महोत्सव गीत का संगान किया गया।

अमृत पुरुष ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आज फाल्गुन शुक्ला-१-२ का दिन है। आज अणुव्रत अमृत महोत्सव कार्यक्रम मना रहे हैं। आचार्य तुलसी अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक थे। उनके गुरु पूज्य कालूगणी एवं उनका जन्मदिन शुक्ला दूज रहा है। अणुव्रत आंदोलन की जन्मभूमि सरदारशहर है।

आचार्य तुलसी ने एक ऐसा आंदोलन शुरू किया जो तेरापंथ को व्यापक रूप देने वाला निमित्त भूत बन गया। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन शुरू करने के बाद बहुत लंबी यात्राएँ की थीं। राष्ट्रपति से लेकर आम ग्रामीण जनता तक उनका संपर्क हुआ था।

अणुव्रत को स्वीकार करने के लिए कोई सीमा नहीं है। किसी भी धर्म-जाति या अवस्था का आदमी तो क्या नास्तिक भी अणुव्रत को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत में बहुत व्यापकता है, संकीर्णता नहीं है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था व आदर्श साहित्य संघ भी आज के दिन से जुड़े हुए हैं।

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के लिए बहुत परिश्रम किया था तो आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी अपना नेतृत्व-परामर्श और अनुशासित्व प्रदान किया था। आदमी की चेतना में सत्-संकल्प को सन्निहित करने वाला यह अणुव्रत आंदोलन है। आर्थिक सूचिता एक शुद्ध साध्य और साधन की बात बन जाती है।

अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने में अनेक चारित्रात्माओं का योग रहा तो अनेक गृहस्थ कार्यकर्ताओं का अणुव्रत को संप्रसारित करने में योग रहा। गैर तेरापंथी और अजैन जुड़े, इस महा-अभियान को आगे बढ़ाने में बहुतों ने योगदान दिया था।

हम यात्रा में लोगों से संपर्क करते हैं, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की बात करते हैं, यह एक अणुव्रत का ही कार्य है। इसे आगे बढ़ाने में व्यक्तियों का योगदान है, तो संस्थाओं का भी योगदान है। वर्तमान में मुख्यतया अणुव्रत के अभियान को आगे बढ़ाने में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अपना दायित्व अदा कर रही है। कार्यकर्ताओं में भी उत्साह प्रतीत हो रहा है। जितना कार्य कर सके, कार्य करते रहें।

मानव जाति के कल्याण के लिए अणुव्रत के नियम-नैतिकता-संयम की उपयोगिता है। आदमी में अच्छे संस्कार होते हैं, तो आदमी अच्छा कार्य भी कर सकता है। आज प्रातः ११:०१ पर यह महोत्सव शुरू हुआ है। अगले वर्ष की यही तिथि और यही समय इसके समापन का हो।

हमारी जो यात्रा चल रही है, उस एक वर्ष की यात्रा का नाम—'अणुव्रत यात्रा' के रूप में घोषित कर रहे हैं। अच्छा कार्य चलता रहे, अच्छा उत्साह रहे। पूज्यप्रवर ने अणुव्रत गीत—'संयममय जीवन हो' का सुमधुर संगान किया। अणुव्रत के घोषों का सम्मुच्चारण करवाया। अणुव्रत के माध्मय से गुरुदेव तुलसी की भी अच्छी अभ्यर्थना हो सकेगी। अच्छा कार्य चले। मंगलकामना। अणुव्रत का विशेषांक आया है, इससे भी अच्छी प्रेरणा मिले।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गणाधिपति गुरुदेव तुलसी एक आध्यात्मिक संत ही नहीं थे, साथ-साथ वे राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं से अनभिज्ञ नहीं थे। उनका चिंतन था कि हम समाज-राष्ट्र में रहते हैं, तो हम उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से राष्ट्रीय और सामाजिक चरित्र को उन्नत करने का प्रयास किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमें संयममय जीवन अपनाना है, तो अणुव्रत की आचार संहिता को जीवन में स्वीकार करना होगा। अणुव्रत के नियम हर व्यक्ति के जीवन में आएँ और वह, उसका परिवार, समाज सुख-चैन की दिशा में आगे बढ़े।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने नैतिकता शून्य धर्म की स्थिति को देखकर अनैतिकता की धूप से बचाने के लिए इस अणुव्रत की छत्री को लोगों के सामने प्रस्तुत किया।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए अणुव्रत आचार संहिता के नियमों को उपस्थित परिषद को स्वीकार करवाए। खेड़ब्रह्मा के विधायक तुषार चौधरी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूर्व अध्यक्ष संजय जैन, आज के संयोजक राजेश सुराणा, कुसुम लुणिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत के महत्त्व को समझाया।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में उत्तर बुनियादी आश्रमशाला से प्रिंसिपल मौलिका बेन, सुंदरम आदिवासी आश्रमशाला से प्रियंका बेन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विद्यालय के विद्यार्थियों की सुंदर प्रस्तुति हुई।

पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों एवं विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए। अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संपादकीय

शासनमाता नमो नमः

(प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धार्पण)

तेरापंथ धर्मसंघ एक ओजस्वी एवं प्राणवान् धर्मसंघ है, जहां एक आचार—एक विचार और एक नेतृत्व को ही सर्वस्व माना गया है।

इस जगत में कुछ विरल व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो जन्म से साधारण होते हैं परन्तु अपने पुरूषार्थ, संयम और कर्म से महान बन जाते हैं और जो कर्म से महान बन जाते हैं, वे गुरूकृपा पाकर असाधारण बन जाते हैं।

ऐसी ही महान व्यक्तित्व की धनी थी शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी। संघपति के प्रति बेजोड़ समर्पण, अद्भुत प्रशासकीय कार्यशैली, अनुशासित जीवनशैली, संवेदनशील कवि हृदय, कुशल लेखन आदि उनके व्यक्तित्व के ऐसे पहलू हैं, जो उनके आसाधारण होने की संज्ञा को सार्थक बना देते हैं।

आचार्यश्री तुलसी ने जब उन्हे 22 वर्ष की वय मे साध्वी समाज का नेतृत्व सौंपा तब शायद किसी ने भी नहीं सोचा होगा कि स्वयं आचार्य प्रवर उनके लिए कहेंगे कि —'साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की योग्यता, आचार्य पद की योग्यता से कम नहीं है।' आचार्य तुलसी द्वारा कहे गये ये शब्द उनके व्यक्तित्व की विराटता को प्रदर्शित करते हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी उनके लिए फरमाते थे कि—'दायित्व उन्हें दिया जाता है, जिनमें योग्यता हो, क्षमता हो। कनकप्रभाजी में दोनों हैं। उनकी विनम्रता को प्रथम श्रेणी में रखा जा सकता है। साध्वीप्रमुखाजी ने योग्यता की कसौटी में शत—प्रतिशत नहीं अपितु सवा सौ प्रतिशत अंक अर्जित किये हैं।' तेरापथ धर्मसंघ के दार्शनिक आचार्य द्वारा उनके लिए कहे गये ये शब्द उनकी दायित्व निष्ठा एवं योग्यता को परिलक्षित करते हैं।

एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उनके जीवन के हर पहलू का अहोभाव और उदारता के साथ मूल्यांकन करते हुए नव इतिहास का सृजन किया। आचार्यश्री के पदाभिषेक पर साध्वीप्रमुखाजी ने संचालन का दायित्व संभाला और आचार्य प्रवर ने अपने उद्बोधन में महासती, महाशक्ति आदि महनीय शब्दों का प्रयोग किया। गौहाटी चातुर्मास में साध्वीप्रमुखाश्रीजी को 'असाधारण साध्वीप्रमुखा' के अलंकरण से संबोधित किया और लाडनूं में आचार्य प्रवर ने उनके प्रति सम्मान की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करते हुए 'शासनमाता' के उत्कृष्ट अलंकरण से नवाजा तो सम्पूर्ण धर्मसंघ अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा था।

साध्वीप्रमुखाजी की शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में जब आचार्य प्रवर को ज्ञात हुआ कि प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया है कि 'गुरुदर्शन की इच्छा है।' इस संवाद के प्राप्त होते ही सभी पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों को छोड़कर आचार्य प्रवर तुरंत दिल्ली की ओर उन्मुख हो गए। आचार्य प्रवर ने प्रलंब विहार कर एक ही लक्ष्य सामने रखते हुए कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी को दर्शन देकर उनकी मनोकामना को पूर्ण करना है और आचार्य प्रवर ने एक दिन में सर्वाधिक लगभग 47 किलोमीटर का विहार कर न केवल साध्वीप्रमुखाश्रीजी की मनोकामना को पूर्ण किया अपितु स्वयं आचार्य प्रवर ने भी गहरे आत्मतोष का अनुभव किया। जब आचार्य प्रवर हॉस्पिटल में पधारे तो दर्शन देते हुए स्वयं भी साक्षात् प्रदक्षिणा कर वंदन मुद्रा में एक सामान्य साधु की भांति साध्वीप्रमुखाश्रीजी की सुखसाता पुछ रहे थे। वह विरल दृश्य देखकर उपस्थित श्रद्धालु श्रद्धाभिभूत थे। सुदूर क्षेत्रों में बैठे श्रावक समाज ने जब वह दृश्य सोशल मीडिया के माध्यम से देखा तो हर किसी के मुख पर एक ही बात थी कि धन्य हैं ऐसे महान गुरु और धन्य है शासनमाता। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें साधना करने के लिए ऐसा महान धर्मसंघ मिला और हमारा पथदर्शन करने के लिए ऐसे महान आचार्य प्रवर मिले।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी तेरापंथ धर्मसंघ में ऐसी साध्वीप्रमुखा थी, जिन्होंने तीन आचार्यों के शासनकाल में उनके पावन दिशा निर्देशन में साध्वीप्रमुखा पद का दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया। साधु—साध्वी, समण—समणी हो या श्रावक—श्राविकागण, जो भी उनके उपपात में अपनी भावना प्रस्तुत करता तो साध्वीप्रमुखाश्रीजी से माँ की तरह पावन आशीर्वाद मिलता। वे उनकी हर समस्या को सुनकर समाधान देने का प्रयास करती। इस प्रकार की सारसंभाल मिलने के कारण वे मातृहृदया कहलाती थी।

शासनमाता ने तो रंगों के त्योंहार होली के दिन इस जहां को अलविदा कह दिया, परन्तु सतरंगी संस्कारों की सद्प्रेरणा देने वाली प्रमुखाश्रीजी विदेह आज भी विद्यमान है।

प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी आत्मा के उत्तरोतर आध्यात्मिक आरोहण एवं चिर लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की मंगल कामना करते हुए हम स्वयं के प्रति कामना करते हैं कि आपके जीवन से हमें गुरुभक्ति, संघ समर्पण, अनुशासन, दायित्वबोध की प्रेरणा सदैव मिलती रहे। आपका दिव्याशीष हम पर सदैव बना रहे।

शासनमाता नमो नमः

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**